❖ वर्ष 49 ❖ अंक 09 ❖ सितम्बर 2022

₹ 15/-

# हँसती दुनिया

# हँसती दुनिया

● वर्ष 49 ● अंक 09 ● सितम्बर 2022 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9
हेतु एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र



Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org


*Available on Website*

## सदस्यता शुल्क

| देश | 1 वर्ष | 3 वर्ष | 5 वर्ष | 11 वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| भारत/नेपाल | ₹ 150 | ₹ 400 | ₹ 700 | ₹ 1500 |
| यू.के. | £ 15 | £ 40 | £ 70 | £ 150 |
| यूरोप | € 20 | € 55 | € 95 | € 200 |
| अमेरिका | $ 25 | $ 70 | $ 120 | $ 250 |
| कनाडा/आस्ट्रेलिया | $ 30 | $ 85 | $ 140 | $ 300 |

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

## स्तम्भ


4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
12. चित्रकथा
21. क्या आप जानते हैं?
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

# हँसती दुनिया

## कविताएं


7. सभी बड़ों से लें आशीष
: डॉ. दिलीप धींग

17. हिन्दी
: दीपक कुमार 'दीप'

17. पुस्तक
: राजेन्द्र निशेश

24. मीठे बोल
: हरजीत निषाद

24. शिक्षक
: दिनेश विजयवर्गीय

33. सेब, डेंगू मच्छर
: गौरीशंकर वैश्य

47. पेड़ लगाओ
: राजकुमार जैन 'राजन'

47. फूल
: गौरीशंकर


## कहानियां


9. दुलारा गोलू
: अंकुश्री

18. शेरू को मिला सबक
: ललित शौर्य

22. पक्का रबड़ कैसे बना?
: राधेलाल 'नवचक्र'

25. वनपरी की दावत
: शिवचरण मंत्री

31. वास्तविक पहचान
: भारतभूषण शुक्ल

39 अनोखी सजा
: राज जैन

46 गाँव को डूबने से ...
: किशोर डैनियल


## विशेष/लेख


8. ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन
: प्रेरणा

16. विटामिन 'सी'
: प्रभा

29. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल

30. लीची
: राजकुमार जैन

42. लेसर किरणें
: कैलाश जैन

50. दूरबीन की खोज
: सुष्मिता

सबसे पहले

# व्यावहारिक शिक्षा

एक मूर्तिकार पत्थर से अनावश्यक पत्थर को हटा देता है और वह मूर्ति को प्रकट कर देता है। इसी तरह शिक्षक भी अपने शिष्यों को जीवन जीने की शिक्षा देकर व्यर्थ की बातों से हटाने का सार्थक प्रयत्न करते हैं। पत्थर तो जड़ है वह कुछ नहीं कहता और कोई आपत्ति भी नहीं करता कि मुझे क्यों और कैसे काटा-पीटा या तराशा जा रहा है। इसी तरह अगर हम भी अपने आपको पूरी तरह शिक्षक को समर्पित कर दें तो वह एक नया रूप देकर हमें दिव्य विभूति बनाने की ताकत रखता है। कोई स्वयं नहीं जानता कि उसकी कमजोरी कहाँ है और अगर जानता भी है तो उसे दिशा-निर्देश की आवश्यकता होती है। जैसे मील का पत्थर लगा होता है या चिन्ह लगे होते हैं। वे निश्चित रास्ते या गन्तव्य को दर्शाते हैं तो हम अपनी मंजिल तय कर लेते हैं। उसमें हम अपनी मनमानी नहीं करते बल्कि उन दिशा-निर्देशों का पालन करते हैं।

शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत और व्यापक है। जैसे शारीरिक, व्यावहारिक, सामाजिक, नैतिक, भौतिक और आध्यात्मिक शिक्षा आदि-आदि। शिक्षा लेने वाले इच्छुक व्यक्ति को अवश्य ही वह शिक्षा प्राप्त हो जाती है। जब शिष्य तैयार हो जाता है तो गुरु वहाँ स्वयं ही प्रकट हो जाता है और इच्छुक की जिज्ञासा का निराकरण कर देता है। वैसे तो हम हर प्राणी से, प्रकृति से कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। वह भी हमारे शिक्षक ही होते हैं। ऐसे ही व्यावहारिक जीवन जीने वालों से हम शिक्षा लेते रहे हैं और अब भी ले रहे हैं।

एक बार एक माँ अपने बच्चे को एक सन्त के पास लेकर गई और उनसे प्रार्थना करते हुए कहा कि मेरा बच्चा बहुत गुड़ खाता है। कृपया इसे समझाएं कि यह ऐसा न करे। इस पर सन्त ने कहा कि इसको मेरे पास एक सप्ताह के बाद लेकर आना। वह माँ एक सप्ताह बाद फिर सन्त के पास पहुँची तब उस सन्त ने उस बच्चे को प्रेमपूर्वक यह कहा कि बेटा! अधिक गुड़ नहीं खाना चाहिए। बच्चे ने सहमति में सर हिला दिया और कहना मानकर गुड़ खाना छोड़ दिया परन्तु माँ ने उस सन्त से कहा कि यह बात तो आप एक सप्ताह पहले भी कह सकते थे। इस पर उस सन्त ने कहा कि जब आप पहली बार मेरे पास आई थीं, उस समय मैं बहुत गुड़ खाता था फिर मैंने उसी समय से गुड़ खाना छोड़ दिया और आज मैं यह बात कह पाया क्योंकि असर भी उसी बात का होता है जिसको हमने पहले अपने जीवन में भी अपनाया हो।

ऐसे महान गुरु एवं व्यावहारिक शिक्षक थे- युगपुरुष सत्गुरु बाबा अवतार सिंह जी महाराज। आपने जिस सनातन सत्य को जाना, उसी का उपदेश जगत में दिया। अनेकों बाधाओं और अदम्य साहस से सत्य की ज्योति में जिए और अपने आचरण से, आलोक से सभी जीवों को ज्ञान दीक्षा भी दी। इसी कड़ी में हमारी हँसती दुनिया के दादा आदरणीय निर्मल जोशी जी एवं आदरणीय जे. आर. डी. सत्यार्थी जी ने भी आप से ज्ञान दीक्षा ली और आज हँसती दुनिया हमेशा हँसती रहे के कार्य को उन्मुख किया।

समस्त दुनिया हमारी हँसती दुनिया द्वारा हँसती रहे, हँसाती रहे। सबको जीवन जीने की कला में अग्रणी सहयोग करती रहे। इसी आंकाक्षा के साथ सभी गुरुजनों, शिक्षकों को हमारा सादर प्रणाम।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ :

# सम्पूर्ण अवतार बाणी

## पद संख्या 258

सन्त है जेहड़ा स्वास स्वास विच रब दा नाम ध्यान्दा ए।
सन्त है जेहड़ा दूजे दा दु:ख खिन दे विच मुकान्दा ए।
सन्त है जेहड़ा सभ घालां तों किरपा करे बचा देवे।
सन्त है जेहड़ा छिन दे अन्दर अंग संग रब विखा देवे।
रब नूं एहनां सन्तां कोलों वखरा कोई नहीं कह सकदा।
बन्दे तों अवतार जिवें परछावां वख नहीं रह सकदा।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सत्य का आचरण करने वाला आत्मज्ञानी सन्त स्वास-स्वास पर परमात्मा का ध्यान करता है। वह किसी पक्ष-विपक्ष के विवाद में पड़े बिना सबको एक समान समझता है। जो पल-पल अपने प्रभु को याद रखता है, हर पल इसका शुकराना करता है वही सच्चे अर्थों में सन्त है। सन्त किसी खास वेशभूषा या बाहरी आवरण का नाम नहीं है। सन्त वृत्ति अन्दर की भावना है जो निरन्तर परमात्मा से जुड़ी रहती है।

सन्त दूसरे का दुख पलभर में समाप्त कर देता है। संसार का सबसे बड़ा दुख जन्म-मरण की यातना भोगना है। सन्त अंग-संग मौजूद इस परमात्मा का बोध कराकर जिज्ञासु को जीवन मुक्त करता है। क्षणभर में संसार के समस्त दुखों का अन्त सन्त की कृपा से ही सम्भव है। अन्य किन्हीं उपायों से ऐसा हो पाना सम्भव नहीं है। सन्त का स्वभाव प्रेम, दया और करुणा वाला होता है। वह मानव को हर प्रकार की मुसीबतों, परेशानियों से अपनी कृपा द्वारा बचा लेता है। सन्त का सबसे बड़ा गुण ही यह है कि वह क्षणभर में इस अविनाशी विराट सत्ता परमपिता-परमात्मा के अंग-संग दर्शन करा देता है। सन्त की अवस्था इस प्रभु-परमात्मा से अलग नहीं होती बल्कि वह प्रभु के साथ ऐसे घुलमिल गया होता है जैसे जल में शकर घुलकर जल का ही रूप हो जाती है। आत्मज्ञानी सन्त परमात्मा का ही रूप होते हैं और वे निरन्तर इसी के अहसास में जीवन व्यतीत करते हैं।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि जिस प्रकार मानव की परछाई हर परिस्थिति में हमेशा मानव के साथ होती है, कभी उसका साथ नहीं छोड़ती, वह जहाँ-जहाँ जाता है परछाई उसके साथ ही जाती है। इसी तरह सन्त को कोई भी परमात्मा से अलग नहीं कर सकता। सन्त हमेशा परमात्मा के साथ इकमिक होकर आनन्द की अवस्था में रहता है। इन्सान को भी सन्तों की भांति अपना आचरण और व्यवहार सुनिश्चित करके हमेशा इस प्रभु का नाम सुमिरण करना चाहिए और यथा सम्भव लोगों की पीड़ा दूर करने को तत्पर रहना चाहिए।

भावार्थ : हरजीत निषाद

# अनमोल वचन

❖ शिक्षा के क्षेत्र में देखें तो जो छात्र लगन, मेहनत और समय लगाकर पढ़ाई करते हैं वे नंबर तो अच्छे लाते ही हैं, साथ ही उन्हें पढ़ा हुआ सबक सारी उम्र याद रहता है जिसे वे उपयोग करके लाभ प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर जो छात्र केवल आखिरी दिनों में पढ़ाई करके पेपर देते हैं हो सकता है वे पास तो हो जाएं पर उन्हें सबक अच्छे से याद नहीं होता। वे केवल क्षणिक स्मृति में विषय डालकर फिर उसे भूल जाते हैं।

इसी प्रकार ब्रह्मज्ञान द्वारा जो निराकार-प्रभु का बोध हमें हुआ है उसे ताउम्र हमें याद रखना है। ये ऐसी दौलत है जो जितना प्रयोग करेंगे उतना ही यह बढ़ेगी। इसे हमने संभाल के भी रखना है जिसके लिए निरंतर परमात्मा का यशोगान करना होगा। हर अवस्था में इसी का सहारा लेना होगा।

❖ हमेशा विनम्रता, प्यार, करुणा और दया के भाव से युक्त रहना चाहिए।

❖ मन में यही शुकराने का भाव हमेशा बना रहे कि मालिक तेरी कृपा है जो तूने सब कुछ दिया है न दिया होता तो मैं आगे देने वाला कौन हूँ?

❖ भक्त सेवा, सुमिरण, सत्संग करते हुए इस जीवन की यात्रा को तय करता है। अपना उद्धार करता है और औरों का कल्याण भी। – **सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज**

❖ शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्तित्व का पूर्ण विकास।

❖ शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता के विकास का नाम है।

❖ विद्या धन से बढ़कर कोई धन नहीं है।

❖ गुण सब स्थानों पर आदर प्राप्त कर लेता है।

❖ वही उन्नति कर सकता है जो स्वयं को उपदेश देता है।

❖ अपनी विद्वता पर गर्व करना, सबसे बड़ा अज्ञान है।

❖ उम्र किसी को बड़ा नहीं बनाती बल्कि गुणों के अनुभव से ही आदमी की पहचान बनती है।

❖ मुँह से निकली बात सिर्फ दूसरों के कानों तक रह जाती है लेकिन दिल से निकली बात दूसरों को गहराई से सोचने पर मजबूर कर देती है।

❖ साधनों द्वारा नहीं अपितु नैतिकता के बल द्वारा ही मनुष्यों और उनके कर्मों पर अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।

❖ हमें बड़ी-बड़ी बातों के बारे में नहीं सोचना चाहिए बल्कि अच्छी बातों को ध्यान में रखकर कुछ कर दिखाना चाहिए।

❖ जो बीत गया सो बीत गया, 'आज' हम कुछ अच्छा कर लें ताकि आने वाले 'कल' की इन्तजार न रहें।

– **अज्ञात**

**संकलन : श्रीराम प्रजापति**

बाल कविता : डॉ. दिलीप धींग

# सभी बड़ों से लें आशीष

रोज सुबह झुकाएं शीश,
सभी बड़ों से लें आशीष।

आशीर्वाद से शक्ति मिलती,
मन को सच्ची शान्ति मिलती।
फलती अभिलाषाएं सारी,
दिल में नहीं रहती है टीस।।

विनय हमारा धर्म मूल है,
सद्‌गुण का महकता फूल है।
प्यार अपार मिलेगा हमको,
यदि कभी हम करें ने रीस।।

विनयवान आगे बढ़ता है,
सफलता की सीढ़ियां चढ़ता है।
चहुँ ओर चमकता जैसे,
श्याम निशा में हो रजनीश।।

फलदार वृक्ष झुक जाते,
जल भरे बादल झुक जाते।
जो झुकता उसके आगे भी,
सभी खड़े रहते नत शीश।।

रोज सुबह झुकाएं शीश,
सभी बड़ों से लें आशीष।

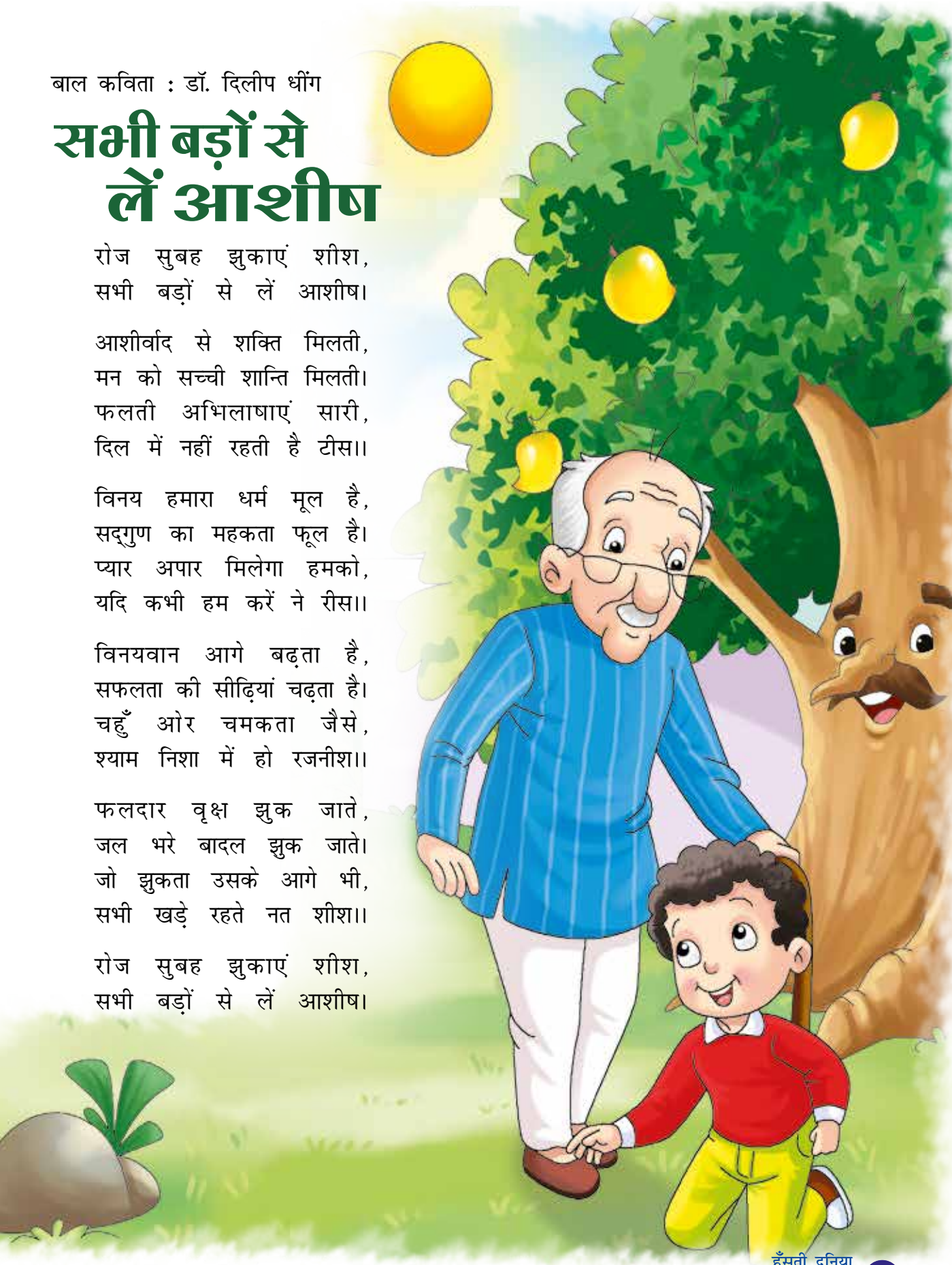

# ऐसे थे डॉ. राधाकृष्णन

भारत में पहली बार शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 1962 को मनाया गया। हुआ यूं कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के छात्र उनके जन्मदिन को एक समारोहपूर्वक मनाना चाहते थे। तब राधाकृष्णन ने कहा कि इस दिन को मेरे अकेले के जन्मदिन के तौर पर मनाने के बजाय अगर तुम इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाओ तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा। तभी पूरे देश में 5 सितम्बर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

डॉ. राधाकृष्णन केवल शिक्षक ही नहीं थे बल्कि वे यूनेस्को और मास्को में भारत के राजदूत भी बने। आगे चलकर वे देश के पहले उपराष्ट्रपति और फिर राष्ट्रपति बने। सन् 1954 में उन्हें देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया। वर्ष 1961 में जर्मन 'बुक ट्रेड' ने उन्हें शांति पुरस्कार प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन बड़े ही मानवीय और दयालु थे। राष्ट्रपति भवन में उनसे मिलने कभी कोई भी आ सकता था। उस समय उनका वेतन दस हजार रुपये था। लेकिन वे उसमें से केवल 2500 रुपये ही स्वीकार करते थे। बाकी का वेतन वे प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष में दान दे देते थे। 17 जुलाई, 1975 को उनका स्वर्गवास हो गया था। – **प्रस्तुति : प्रेरणा**

## रोचक जानकारी

- सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 18 सेकेण्ड का समय लगता है।
- पृथ्वी का समुन्दर तल से अधिकतम ऊँचा उठा हुआ भाग 15000 मीटर तक हो सकता है इससे अधिक नहीं। इसकी वजह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति है।
- पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह चंद्रमा है जो कभी इसी का ही भाग था।
- पृथ्वी को सूर्य से ऊर्जा मिलती है और यही ऊर्जा पृथ्वी की सतह को गर्म करती है।
- सूर्य की ऊर्जा का कुछ भाग पृथ्वी और समुन्दर की सतह से टकराकर वायुमंडल में चला जाता है।
- पृथ्वी आकार में सौरमंडल का पांचवा सबसे बड़ा ग्रह है।
- पृथ्वी सौरमंडल का एकमात्र ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन है।
- पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है जिससे पृथ्वी पर दिन और रात बनते हैं।

बालकथा : अंकुश्री

# दुलारा गोलू

गोलू और ऋचा भाई-बहन थे। दोनों अलग-अलग कक्षा में पढ़ते थे। ऋचा अपनी तैयारी स्वयं करती थी। मगर गोलू को तैयार होने में माँ मदद करती थी। माँ उसे विशेष दुलार किया करती थी। इससे वह अधिक शरारती हो गया था। जब उसे विद्यालय जाने में देर होने लगती थी तो ऋचा भी उसकी मदद करती थी। दूसरों की मदद मिलते रहने से गोलू आलसी हो गया था। वह किसी काम को तुरन्त नहीं करके बाद के लिये टाल देता था। इसलिए उसकी जीवन शैली बिखरी-बिखरी हो गई थी।

उस दिन गोलू विद्यालय से आकर अपना बैग सोफा पर फेंक दिया। जूता कहीं फेंका और जुराब कहीं। हाथ में रिमोट लिये वह सोफा में धंसकर चैनल बदल-बदलकर टीवी देखने लगा। वह कोई कार्यक्रम, समाचार या मनोरंजक चैनल नहीं देख रहा था। बार-बार सिर्फ टीवी का चैनल बदल रहा था। कुछ देर बाद वह यकायक चिल्लाया– ''मम्मी खाना।''

माँ गोलू के घर में आते ही खाना परोसने रसोई में चली गई थी। खाने की थाली ड्राइंगरूम में लाकर सेन्ट्रल टेबल पर रख दी। गोलू अब भी टीवी का रिमोट टीप-टाप कर रहा था। बिना हाथ धोये या कुल्ली किये सोफा में धंसे-धंसे वह खाने पर टूट पड़ा। वह एक हाथ से खा रहा था और दूसरे हाथ में रिमोट लेकर चैनल बदलने में लगा हुआ था। वह फिर चिल्लाया– ''मम्मी, मम्मी! कैसा खाना बनाया है? मैं नहीं खाता ऐसा खाना।'' वह आधे से अधिक खाना खा चुका था। उसकी आवाज सुनकर मम्मी दौड़ी-दौड़ी आई, ''क्या हुआ बेटा?''

''यह कोई खाना है?'' गोलू ने मुँह बिचकाते हुए कहा– ''नहीं खाता मैं ऐसा खाना।''

''बेटा! राजा बेटा! खा लो। मैं रात में कुछ और अच्छा खाना बना दूंगी।'' माँ पुचकारते हुए बोली। माँ ने अपने हाथों से उसको दो-चार खाने के कौर खिला दिये। उसके बाद उसका मुँह पोंछकर थाली में हाथ धुला दिये। थोड़ी देर में गोलू की दीदी ऋचा भी विद्यालय

से आ गई। सोफा पर पड़े स्कूल बैग और बिखरे हुए जूते-जुराबों को देखकर वह गोलू पर बरस पड़ी– ''तुम अपना सामान ऐसे क्यों फेंक देते हो? इसे जगह पर रख दो।''

ऋचा की बातें गोलू ने अनसुनी कर दी। जब उसने दुबारा कहा तो गोलू झुंझलाकर बोला– ''मैं अभी टीवी देख रहा हूँ, मुझे कोई परेशान नहीं करे।'' दोनों में बहस होने लगी। आवाज सुनकर माँ आ गई। वह आते-आते

ऋचा को बोलने लगी, ''क्यों हल्ला कर रही हो?''

तुम इसे कुछ नहीं बोलती। देखो! स्कूल से आकर अपने सामान को कैसे फैला दिया है?'' ऋचा ने कहा– ''यह इसका रोज का काम है।''

''इसके सामान को मैं हटा देती हूँ, तुम हल्ला नहीं करो।'' माँ ने कहा– ''शान्त रहो। आते ही हल्ला शुरू कर देना अच्छा नहीं लगता।''

माँ ने गोलू के बैग से लंचबॉक्स निकाला। वह पूरा लंच नहीं खाया था। वाटर बोतल में भी आधे से अधिक पानी बचा हुआ था। बैग को माँ ने गोलू के सेल्फ में रख दिया।

ऋचा ने अपना बैग सेल्फ के अन्दर रखकर ड्राइंगरूम के अन्य सामानों को सजा दिया। वह हाथ-पैर धोकर खाना खाने के लिए तैयार हो गई। तब तक माँ खाना लेकर आ गई। ऋचा आसनी पर बैठकर खाने लगी। माँ भी उसके बगल में बैठकर खाने लगी। गोलू हाथ में रिमोट लिये सोफा पर लुढ़ककर सो गया था। करीब दो घंटे बाद गोलू की नींद टूटी। वह चिल्लाते हुए बोला– ''मम्मी, मम्मी! भूख लगी है।''

माँ खाने के बाद ड्राइंगरूम में ही आराम कर रही थी। माँ ने फ्रिज से दो-दो रसगुल्ला और बर्फी निकालकर एक प्लेट में गोलू को बढ़ा दी। ऋचा वहीं बैठकर पढ़ रही थी, मगर माँ ने मिठाईयां सिर्फ अपने दुलारे बेटे को दी। वह गोलू को विशेष दुलार करती थी और उसकी गलतियों की ओर ध्यान नहीं देती थी। इससे गोलू बहुत जिद्दी और आलसी हो गया था। वह समय पर न जगता था, न सोता था। कितना पढ़ना है और कितना खेलना इस ओर तो वह कभी ध्यान ही नहीं देता था। वह हर काम मनमानी ढंग से करता था। उसके विपरीत ऋचा समय पर जागती और समय पर सोती थी। वह थोड़ी देर खेलकर पढ़ने बैठ जाती थी।

दो महीने बाद वार्षिक परीक्षा हुई। ऋचा का कक्षा में प्रथम स्थान आया। इसके विपरीत गोलू को बहुत कम अंक मिले। कम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के

अभिभावकों को विद्यालय में बुलाया गया था। गोलू के पिताजी भी विद्यालय गए थे। उनके इस आश्वासन पर कि गोलू अब मेहनत से पढ़ाई करेगा, उसे अगली कक्षा में भेजा जा सका।

गोलू को ऋचा से कम अंक आना, पिताजी को विद्यालय में बुलाना और उनके द्वारा विद्यालय प्रशासन को आश्वासन देना। ये सारी घटनाएं गोलू को अच्छी नहीं लगीं। लगा कि उसे अन्दर से किसी ने झकझोर दिया है। उसने अपने मन में यह प्रण किया कि अगली बार वह ऐसा नहीं होने देगा। माँ ने एक दिन कहा था कि छात्र का मुख्य काम पढ़ाई है। वह बात गोलू के दिमाग में कौंधने लगी। ऋचा को घर का काम-काज करते हुए भी अधिक अंक मिलने से भी वह प्रभावित था। उसने तय किया कि अब मन लगाकर पढ़ेगा। पढ़ाई के प्रति उसने लापरवाही बंद कर दी। जागने, उठने, बैठने और सामानों को सही जगह पर रखने आदि में भी वह ऋचा की बातों को मानने लगा। वह ऋचा के व्यवहार से सीखने भी लगा।

माँ ने भी एक काम किया। पापा की बात मानकर वह गोलू को बिना मतलब दुलार

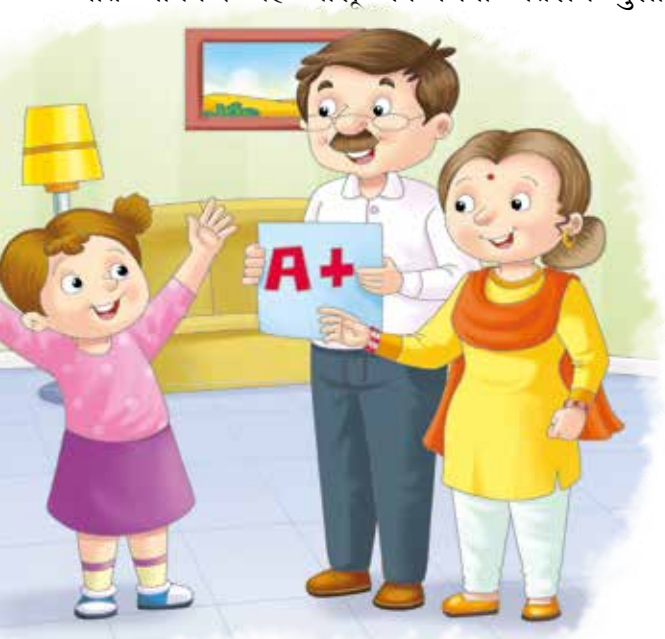

करना बंद कर दिया। इससे समय का पालन करने, सामानों को जगह पर रखने, सफाई का ध्यान रखने आदि आदतें उसमें विकसित होने लगीं। गोलू की मेहनत रंग लाने लगी। उसमें लगनशीलता भी आ गई। बच्चों में उत्साह तो होता ही है। वह भी उत्साहपूर्वक अपना काम करने लगा। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा। आत्मविश्वासी व्यक्ति प्रगति-पथ पर तेजी से बढ़ता है। गोलू भी नित आगे बढ़ने लगा। लोग उसका अर्द्धवार्षिक परीक्षा-फल देखकर हैरान हो गये। अपनी कक्षा में उसे सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए। सुपरिणाम से प्रगति आती है। गोलू पढ़ाई में और मेहनत करने लगा। अब उसे सुबह-सुबह जगाना नहीं पड़ता था। उसे पढ़ने या होमवर्क करने के लिये भी नहीं कहना पड़ता था।

गोलू का वार्षिक परीक्षाफल देखकर सभी अचंभित थे। अच्छा अंक लाने के साथ ही विद्यालय की अन्यान्य गतिविधियों में भी उसने अपनी पहचान बना ली थी। मोहल्ले के लोग और रिश्तेदारों ने भी गोलू का उदाहरण देना शुरू कर दिया था। लोग उदाहरण दे भी क्यों नहीं? योग्य बच्चे सभी को अच्छे लगते हैं।

# चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन : अजय कालड़ा

यही सोचकर उसने अगले घर का दरवाजा खटखटाया। वह दरवाजा एक लड़की ने खोला। उस लड़के की हिम्मत टूट-सी गई।
उसने खाने की जगह सिर्फ पानी मांगा। पर उस लड़की ने पानी न लाकर एक गिलास भरकर दूध दे दिया।
उस लड़के ने दूध पीकर उस लड़की से पूछा– दीदी मेरे पास इस दूध की कीमत के लिए पैसे नहीं हैं। मैं आपका अहसान कैसे चुकाऊँ।
वह लड़की हँस पड़ी और बोली– हमारे मम्मी-पापा कहते हैं कि किसी की सेवा, स्वार्थ या लाभ के लिए नहीं की जाती। तुम भूखे लग रहे थे। इसलिए मैंने दूध दे दिया।

लड़के ने दिल से उस लड़की का शुक्रिया अदा किया और वहाँ से चला गया।
काफी साल बीत गये। वह गरीब लड़का बड़ा हुआ तो विश्व में डॉक्टर हावर्ड कैली के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
बच्चों, डॉक्टर हावर्ड कैली ने ही सबसे पहले रेडियम का इस्तेमाल किया था। कैंसर को ठीक करने के लिए उन्होंने कई नई चीज़ों का आविष्कार भी किया था।
एक दिन जब डॉक्टर कैली अपने अस्पताल में काम कर रहे थे तो उन्हें खबर मिली कि एक बहुत बीमार औरत अस्पताल आई है।

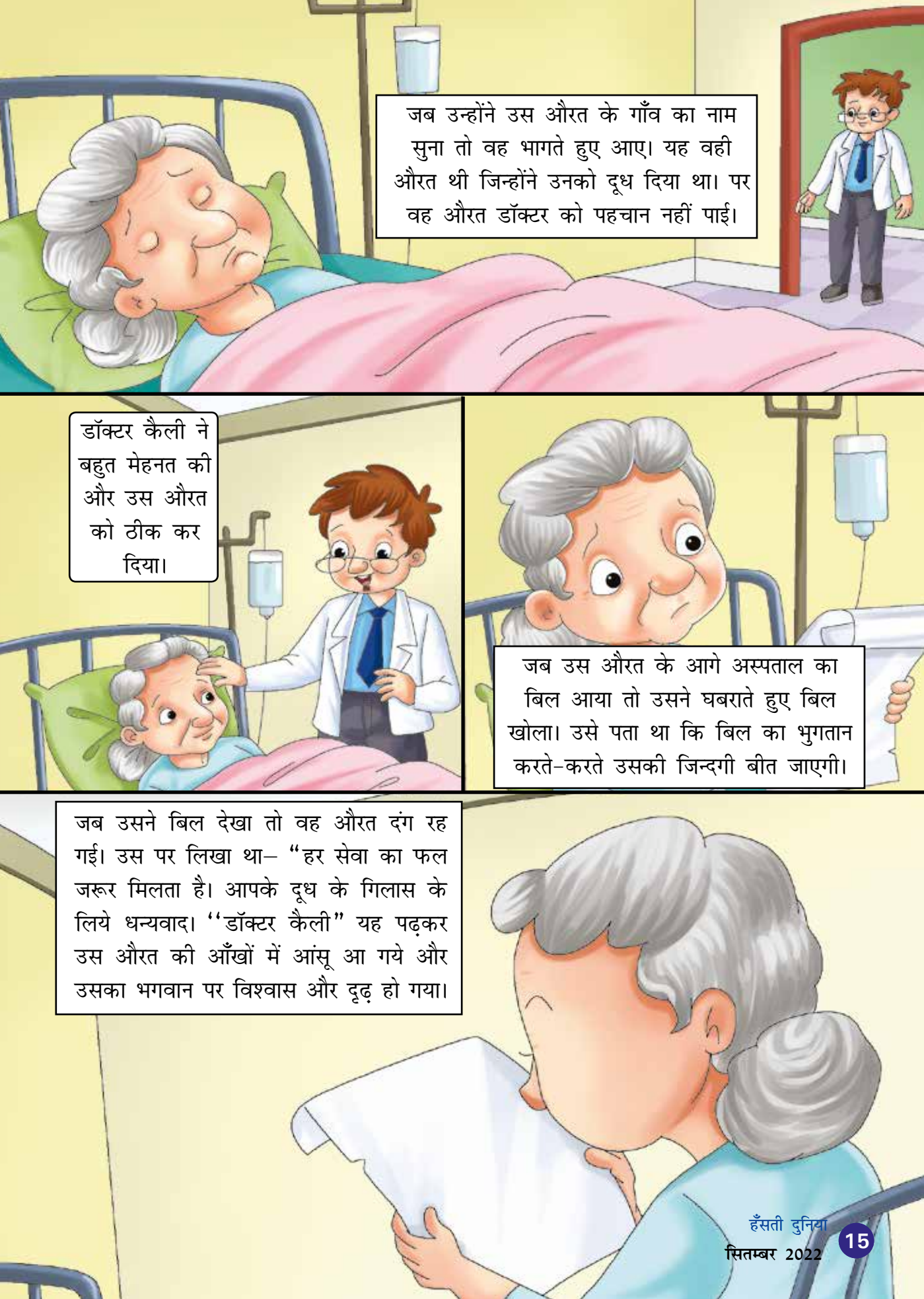
जब उन्होंने उस औरत के गाँव का नाम सुना तो वह भागते हुए आए। यह वही औरत थी जिन्होंने उनको दूध दिया था। पर वह औरत डॉक्टर को पहचान नहीं पाई।
डॉक्टर कैली ने बहुत मेहनत की और उस औरत को ठीक कर दिया।
जब उस औरत के आगे अस्पताल का बिल आया तो उसने घबराते हुए बिल खोला। उसे पता था कि बिल का भुगतान करते-करते उसकी जिन्दगी बीत जाएगी।
जब उसने बिल देखा तो वह औरत दंग रह गई। उस पर लिखा था– "हर सेवा का फल जरूर मिलता है। आपके दूध के गिलास के लिये धन्यवाद। ''डॉक्टर कैली" यह पढ़कर उस औरत की आँखों में आंसू आ गये और उसका भगवान पर विश्वास और दृढ़ हो गया।

# विटामिन 'सी'

विटामिन 'सी' शरीर के लिए काफी महत्वपूर्ण है। इसे 'एस्कॉर्बिक एसिड' के नाम से भी जाना जाता है। यह हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसके नियमित सेवन से सर्दी, खांसी व अन्य तरह के इन्फेक्शन होने का खतरा कम हो जाता है। इतना ही नहीं, यह अनेक प्रकार के कैंसर से भी बचाव करता है और स्वस्थ रखता है। हमारे शरीर की कार्यप्रणाली को सुचारु रूप से चलाने के लिए विटामिन 'सी' अति आवश्यक पोषक तत्वों में से एक है। शरीर के सभी प्रमुख अंगों जैसे ब्रेन, फेफड़े, अग्नाशय और गुर्दे इत्यादि को सही ढंग से काम करने के लिए विटामिन 'सी' की जरूरत होती है। यह शरीर में विटामिन 'ई' की सप्लाई को पुनर्जीवित करता है और आयरन के अवशोषण की क्षमता को भी बढ़ाता है। यह एक एंटी-एलर्जिक व एंटी-ऑक्सीडेंट के रूप में भी काम करता है और दांत, मसूड़ों व आँखों को भी स्वस्थ रखने में भी मदद करता है।

**कमी के लक्षण :** अक्सर सर्दी-जुकाम होना, जोड़ों और मांसपेशियों में दर्द, थकान, कमजोरी और बुखार, रोग प्रतिरोधक क्षमता का कमजोर पड़ना, थकावट, अचानक मसूड़ों से खून आना, मसूड़ों में सूजन, अचानक वजन घटना, बार-बार इंफेक्शन होना, सांस लेने में तकलीफ, पाचन समस्याएं, ड्राई बाल होना, त्वचा की असमान रंगत, घाव का देरी से भरना आदि समस्याएं विटामिन 'सी' की कमी के लक्षण माने जाते हैं।

**इनसे मिलता है विटामिन 'सी' :** विटामिन 'सी' को अपने खान-पान में शामिल करने के लिए आप खट्टे रसदार फलों का सेवन कर सकते हैं। टमाटर, नारंगी, नीबू, संतरा, अंगूर, अमरुद, सेब, जामुन, कीवी, ब्रोकोली आदि में विटामिन 'सी' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। लीची, स्प्राउट्स, लाल, पीली और हरी शिमला मिर्च, गोभी, पालक, स्ट्रॉबेरीज, पपीता में भी विटामिन 'सी' पाया जाता है।

**यह भी ध्यान रहे :** खाद्य पदार्थों को काटकर अधिक समय तक रखने और गर्म करने से उनमें उपस्थित विटामिन 'सी' में कुछ बदलाव हो सकते हैं और विटामिन 'सी' का प्रभाव कम हो सकता है। इसलिए फलों और सब्जियों को कच्चा या हल्का पकाकर खाना चाहिए तथा खाने के बहुत समय पहले से काटकर नहीं रखना चाहिए।

**प्रस्तुति : प्रभा**

कविता : दीपक कुमार 'दीप'

हिन्दी दिवस पर विशेष

हिन्दी हिन्द की आन है,
गर्व हमें है हिन्दी पर।
है भाषा ये सरल बड़ी,
इसकी अलग पहचान है।।

हिन्दी हिन्द का गहना है,
इसे सजायें और संवारें।
दुनिया के कोने-कोने में,
आओ इसको और निखारें।।

हिन्दी से हैं हम और,
हिन्दी से है हिन्दुस्तान।
हिन्दी मेरी हिम्मत है,
इस पर वारूं तन मन प्राण।।

ज्ञान हो हर भाषा का,
ये उत्तम बात है।
पर मातृभाषा को पीछे रखना,
ये विश्वासघात है।।

हिन्दवासी हिन्दी अपनायें,
हिन्दी हो हर घर-घर में।
उन्नत होगा भारत 'दीप',
जीवन के हर सफर में।।

बाल कविता : राजेन्द्र निशेश

# पुस्तक

हर पुस्तक ज्ञान बढ़ाती है,
जीने का गुर सिखलाती है।
कैसे बढ़ सकते हम आगे,
जीवन रहस्य बतलाती है।।

यह पुस्तक बड़ी अनूठी है,
नगीने जड़ी अंगूठी है।
इस दुनिया में क्या होता है?
सच ही कहती कब झूठी है।।

जिन खोजा तिन ही पाया है,
यह अक्षर ज्ञान की माया है।
अच्छी पुस्तक ही पढ़नी है,
गुरु जी ने समझाया है।।

बाल कहानी : ललित शौर्य

# शेरू को मिला सबक

''हम आखिर कब तक डर-डरकर जिएंगे? हमें कुछ करना होगा। अगर हम सबने मिलकर समाधान नहीं निकाला तो चंदनवन पर बड़ी आफत आ जाएगी। यहाँ कोई भी जानवर जिंदा नहीं बच पाएगा। सभी उस शेरू के निवाले बन जाएंगे। वह एक-एक कर हम सभी को खा जाएगा।'' हीरू हिरण ने कहा।

''हीरू ठीक कहता है। हमें कुछ तो करना पड़ेगा। आखिर हम अपने ही जंगल में कब तक जान बचाते फिरेंगे? वह हर रोज किसी न किसी जानवर को निवाला बनाकर 'नौ दो ग्यारह' हो जाता है। हम सब देखते रह जाते हैं।'' डम्पी गधे ने कहा।

''डम्पी भाई लेकिन बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधेगा? इतना बड़ा रिस्क कौन लेगा? शेरू से हमें कौन बचाएगा?'' चीकू खरगोश ने कहा।

''शेरू से लड़ने और बचने की बात हो रही है और तुम बिल्ली की बात कर रहे हो। मैं कहाँ से आ गई बीच में।'' बिल्लो बिल्ली ने सर खुजाते हुए पूछा।

''अरे मैं तुम्हारी बात नहीं कर रहा। ये तो कहावत है। तुम्हीं बताओ इतना कठिन काम कौन करेगा? कौन शेरू से हम सबकी जान बचाएगा?'' चीकू खरगोश बोला।

चीकू और बिल्लो की बातें सुनकर सभी जानवरों के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान आ गई। लेकिन दूसरे ही पल सभी गंभीर हो गए। समस्या बहुत बड़ी थी। शेरू आये दिन चन्दनवन के जानवरों को अपना शिकार बना रहा था।

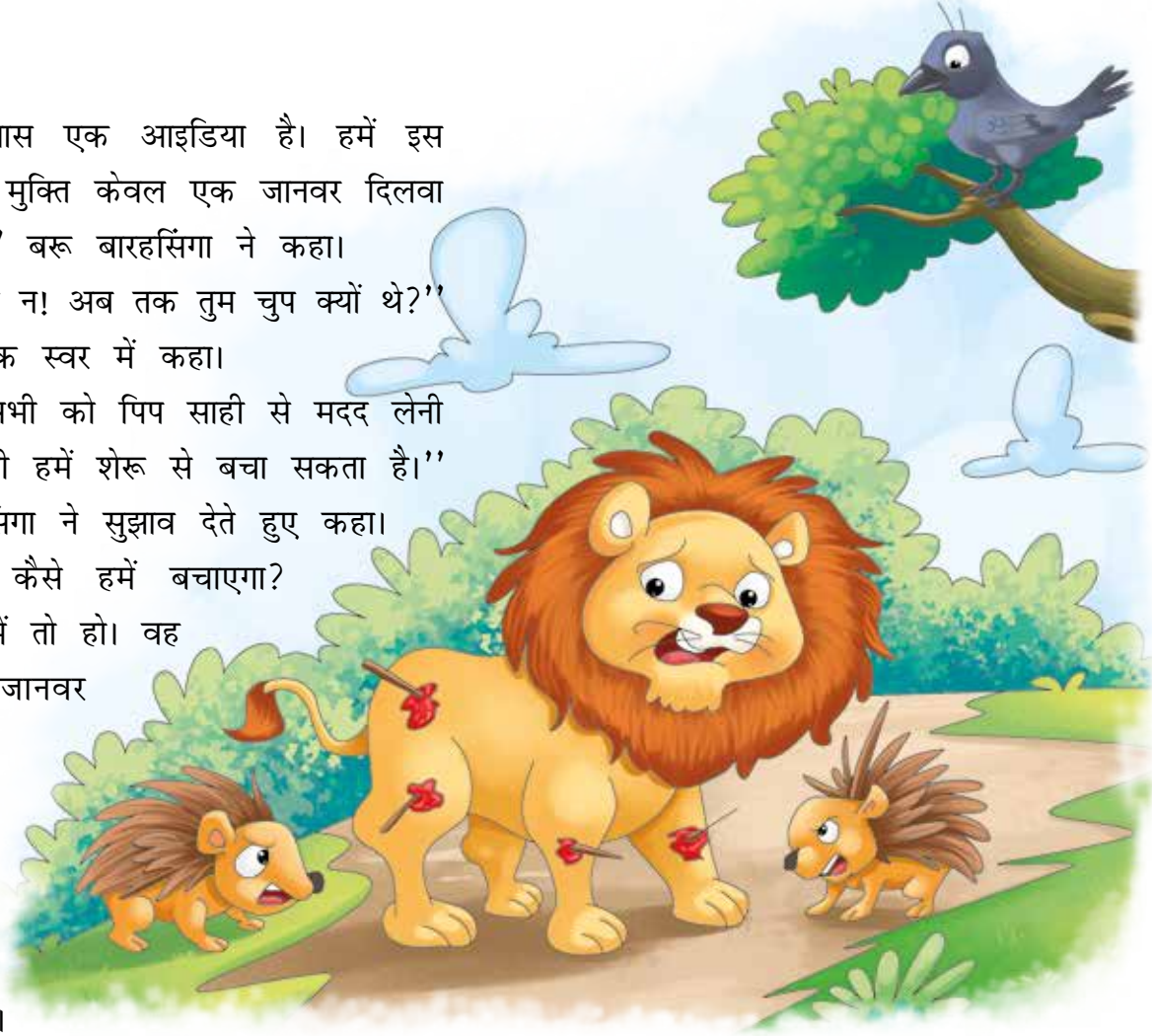

''मेरे पास एक आइडिया है। हमें इस समस्या से मुक्ति केवल एक जानवर दिलवा सकता है।'' बरू बारहसिंगा ने कहा।

''बताओ न! अब तक तुम चुप क्यों थे?'' सभी ने एक स्वर में कहा।

''हम सभी को पिप साही से मदद लेनी चाहिए। वही हमें शेरू से बचा सकता है।'' बरू बारहसिंगा ने सुझाव देते हुए कहा।

''पिप! कैसे हमें बचाएगा? तुम होश में तो हो। वह छोटा-सा जानवर शेरू का मुकाबला कैसे करेगा?'' चीकू बोला।

''अरे तुम्हें पता नहीं पिप की पीठ पर उगे कांटे कितने खतरनाक होते हैं। वह बड़े-बड़ों को नानी याद दिला देते हैं। शेरू के दांत खट्टे करने के लिए पिप से मदद लेनी होगी। फिर ये काम पूरी योजना के तहत होगा।'' बरू ने कहा।

''ठीक है। हमारे पास वैसे भी कोई दूसरा उपाय नहीं है। एक बार तुम्हारी योजना पर प्रयास करके देख लेते हैं।'' हीरू बोल पड़ा।

सभी जानवरों ने हीरू की हाँ में हाँ मिला ली। सभी एक साथ पिप के घर पहुँच गए। पिप को समस्या बताई। पिप भी शेरू के आतंक से भली-भांति परिचित था।

''पिप अब तुम और तुम्हारे रिश्तेदार ही हमारी मदद कर सकते हो। हमारा चन्दनवन हमेशा आप सभी का आभारी रहेगा।'' बरू ने कहा।

''ठीक है। लेकिन ये सब कैसे होगा? योजना तो बताओ।'' पिप ने कहा।

बरू ने पिप के कान में फुसफुसाते हुए पूरी योजना बता दी। बरू मुस्कुराया। योजना को सीक्रेट रखा गया ताकि खबर शेरू तक न पहुँच सके।

अगले दिन शाम होते ही चन्दनवन की सीमा में कक्कू कौवा मंडराने लगा। उसकी पैनी नजर हर हलचल पर थी। अचानक

कक्कू की नजर शेरू पर पड़ी। वह दबे पांव चन्दनवन की सीमा में घुसने का प्रयास कर रहा था।

ये देखते ही कक्कू तीन बार कांव-कांव कर चिल्लाया। उसके चिल्लाते ही पिप और उसके परिवार के 15 सदस्यों ने शेरू पर कांटों की बरसात करनी शुरू कर दी। अचानक हुए इस हमले से शेरू घबरा गया। उसका चेहरा और पूरा शरीर कांटों से छलनी हो गया था। उसके शरीर से खून की धार बहने लगी थी। वह बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाकर 'सिर पर पांव रखकर' भाग खड़ा हुआ।

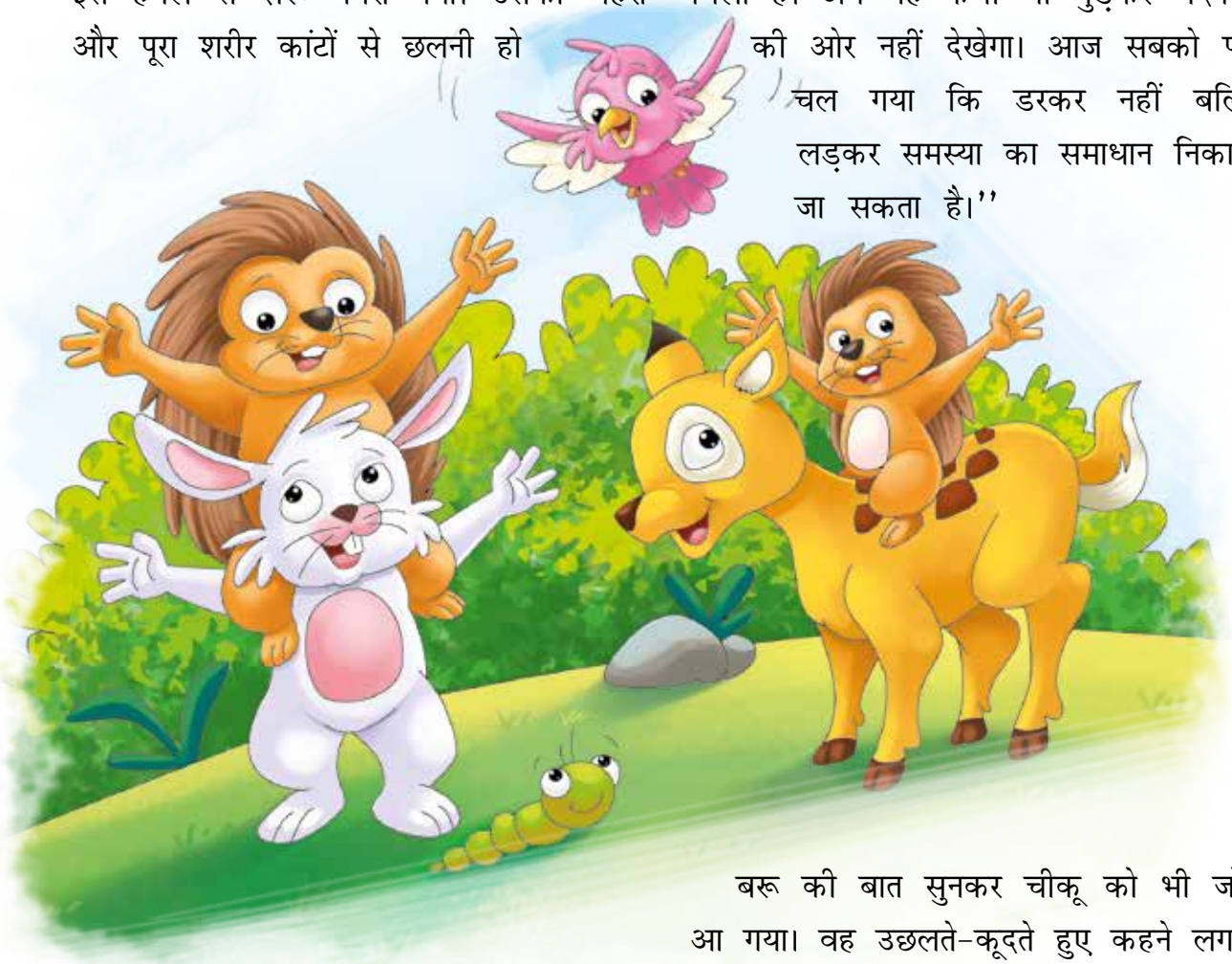

ये देखकर सभी जानवर भी वहाँ आ पहुँचे। सभी ने खूब तालियां बजाईं। जंगल के जानवरों ने पिप और उसके पूरे परिवार को अपनी पीठ पर बैठाकर घुमाया।

अन्त में बरू और सभी जानवरों ने उनका आभार व्यक्त किया। बरू बोला– ''आज आप लोगों के सहयोग से शेरू को बड़ा सबक मिला है। अब वह कभी भी मुड़कर चंदनवन की ओर नहीं देखेगा। आज सबको पता चल गया कि डरकर नहीं बल्कि लड़कर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।''

बरू की बात सुनकर चीकू को भी जोश आ गया। वह उछलते-कूदते हुए कहने लगा– ''आखिर डरना क्यों?''

ये देखकर सभी ठहाके मारकर हँसने लगे। उस दिन से शेरू ने चन्दनवन में आने की हिम्मत नहीं दिखाई।

# क्या आप जानते हैं?

संकलन : विभा वर्मा

- गिरगिट की आँखें एक-दूसरे से स्वतंत्र रहकर अलग-अलग दिशा में देख सकती हैं।
- तुरन्त पैदा हुआ घड़ियाल उसी अंडे से तीन गुणा ज्यादा बड़ा होता है जिस अंडे से वह निकलता है।
- कछुआ एक ऐसा जीव है जिसके दांत नहीं होते।
- कंगारू रेट एकमात्र ऐसा प्राणी है जो कभी पानी नहीं पीता।
- भालू ऐसा विशेष प्राणी है जो जन्म के दो माह तक सोता है और बच्चों की तरह रोता है।
- सेलफिश नाम मछली 80 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार से तैरती है।
- डालफिन सभी मछलियों से बुद्धिमान मछली मानी जाती है।
- कांसा, तांबा एवं टीन धातुओं का मिश्रण है।
- प्रकाश में 7 रंगों में से लाल रंग के प्रकाश का वायुमंडल में प्रकीर्णन कम होता है। इसलिए लाल रंग का प्रकाश बहुत दूर तक संचारित हो जाता है यही कारण है कि खतरे का सिग्नल लाल होता है।
- ऊँट नीम की कड़वी पत्ती को बड़े स्वाद व आराम से खाता है।
- ऊँट की पीठ का कूबड़ वस्तुतः चर्बी का भंडार है। जब इसे भोजन कम मिलता है या लम्बी यात्रा पर होता है तो कूबड़ में जमा चर्बी से ही उसे ऊर्जा प्राप्त होती है। अधिक दिनों तक पर्याप्त भोजन न मिलने पर यह कूबड़ ढीला पड़ जाता है।
- विटामिन 'डी' सूर्य के प्रकाश से त्वचा में तैयार होता है।
- अमेरिका में एक पौधा ऐसा पाया जाता है। जिसकी शक्ल मानव से मिलती-जुलती है। साथ ही उखाड़ने पर बच्चों जैसे रोने की आवाज भी निकालता है। इसे वैज्ञानिक भाषा में मैड्रिक कहते हैं।
- हम 24 घंटों में करीब 8 घंटे सोते हैं, लेकिन बिल्लियां 16 घंटे। इस तरह वह जिन्दगी का दो तिहाई भाग सोकर बिताती हैं।
- केकड़े का शरीर कवच से ढका रहता है। संकट आने पर यह कछुवे के समान अपने शरीर को कवच से बन्द कर लेता है।
- कॉकरोच का रक्त रंगहीन होता है क्योंकि इसमें हीमोग्लोबिन का प्रभाव नहीं होता।

# पक्का रबड़ कैसे बना?

चांदनी रात थी। अध्यापक विजयसेन ने सेठ जी के तीनों लड़कों के सामने नौका-विहार का प्रस्ताव रखा। वे इसके लिए झटपट तैयार हो गये।

अगले ही क्षण वे सब निकट की एक झील के पास पहुँचे। किनारे पर एक नाव रखी पड़ी थी। थोड़ी ही दूर पर मल्लाह का घर था। अध्यापक महोदय ने लड़कों से कहा– 'कोई एक जाकर मल्लाह को बुला लाओ।'

शशि मल्लाह के घर की तरफ तेजी से दौड़ पड़ा। करीब दस मिनट के बाद मल्लाह को लेकर शशि लौटा। अध्यापक महोदय ने मल्लाह से कहा– 'हम लोग दो घंटे नौका-विहार करेंगे। तुम्हें उचित मजदूरी मिल जाएगी।'

'ठीक है।' मल्लाह झट तैयार हो गया।

पलक झपकते सभी नाव पर सवार हुए। मल्लाह ने नाव खोली। दूसरे ही क्षण नाव ने तट छोड़ दी।

नाव में कहीं पर एक गेंद पड़ी हुई थी। सुमन की नजर उस पर पड़ी। उसने उसे हाथ में लेकर कहा– 'लगता है किसी बच्चे की यह गेंद नाव पर छूट गई है।'

'मेरा पाँच साल का एक बेटा है। उसी की यह गेंद है।'– मल्लाह बोला।

अध्यापक महोदय ने उस गेंद को अपने हाथ में लेकर कहा– 'यह गेंद किस चीज की है?'

'रबड़ की।' सन्तोष बोला।

'सही कहा।' अध्यापक महोदय ने बात आगे बढ़ाई। यह गेंद पक्के रबड़ की बनी है।

'तो फिर?' लड़कों ने उत्सुकता दिखाई।

'जानते हो, पक्के रबड़ का आविष्कार कैसे हुआ?'

'बिल्कुल नहीं।'

'सुनना चाहो तो इसके बारे में बताऊँ?'

'हाँ, हाँ जरूर बताइए।'– तीनों ने एक स्वर से कहा।

अध्यापक महोदय ने कहना शुरू किया। 'गुड ईयर नाम का एक व्यक्ति था। उसे रबड़ से काफी लगाव था। वह न्यूयॉर्क की सड़कों पर जब भी घूमने निकलता। रबड़ की ही बनी हुई पोशाक पहने रहता। वह रबड़ को पक्का बनाने का तरीका ढूंढ रहा था। इसके लिए वह अपने मकान में रबड़ के घोल के साथ अन्य रसायनों को मिलाकर अनेक तरह के प्रयोग किया करता।'

तभी एक मछली झील के जल से ऊपर की ओर उछली और फिर छपाक की आवाज़ के साथ झील में जा गिरी। स्वभावत: सभी का ध्यान उस ओर जा खिंचा।

'मछली बड़ी थी।' सुमन बोला।

'हाँ।' शशि ने हामी भरी।

'अब आगे कहिए।' सन्तोष ने अध्यापक महोदय का ध्यान विषय-वस्तु की ओर खींचा।

वह बोले– 'इस प्रयोग में गुड ईयर के मकान से रबड़ के घोल की बदबू पड़ोसियों को आती रहती थी। नतीजा होता कि बराबर उनसे उसको झगड़ना पड़ता।'

'फिर?' सुमन ने टोका।

'पड़ोसियों के अलावा इस कार्य में उसे अक्सर अपनी पत्नी से भी झगड़ा हो जाया करता। इसके बावजूद गुड ईयर अपनी धुन का इतना पक्का था कि अपने इस प्रयोग के पीछे अपनी सारी जमा-पूंजी गंवा दी। यही नहीं, कई लोगों से इसके लिए कर्ज भी उसने लिये और जब समय पर अदा नहीं कर सका तो अनेक बार उसे जेल की सजा भी भुगतनी पड़ी।'

'कमाल का आदमी था गुड ईयर।' शशि हैरान होकर बोला।

'बिल्कुल।'

'जब वह जेल चला गया तो उसने अपना प्रयोग छोड़ दिया होगा?' सुमन ने यों ही अध्यापक महोदय से पूछा।

'नहीं जुगाड़ भिड़ाकर जेल में भी उसने अपना प्रयोग चालू रखा। कुछ-न-कुछ वहाँ भी वह करता रहा। उसका प्रयोगी दिमाग चुपचाप बैठे रहना वाला नहीं था।'

सन्तोष की निगाह एकाकए खुले आकाश की ओर गयी। उसने देखा, बादल का एक टुकड़ा चाँद को ढकने के लिए तेजी से उसकी ओर बढ़ रहा था। वह झट बोला– 'देखो, बादल चाँद को ढकने जा रहा है।'

सभी ने एक झलक उस दृश्य की ओर निहारा।

'क्या जेल में गुड ईयर को अपने प्रयोग में सफलता मिली?' शशि ने यों ही पूछ डाला।

'नहीं, वहाँ उसे कोई सफलता नहीं मिली।' अध्यापक महोदय ने बताया।

'तो फिर?' शशि का सवाल बना रहा।

'जेल से छूटकर आने के बाद की बात है। एक दिन ऐसा हुआ कि गुड ईयर की पत्नी घर पर नहीं थी। गुड ईयर के लिए यह एकदम अनुकूल अवसर था। वह बेफिक्र होकर रसोईघर में रबड़ और गंधक के घोलों का अलग-अलग परीक्षण कर रहा था। अचानकर उसकी नजर रसोईघर की खिड़की की ओर जा टिकी। उसने बाहर गई अपनी पत्नी को लौटते देखा।' कहते-कहते अध्यापक महोदय रूक गये। उन्होंने मल्लाह से कहा– 'भई अब लौटो।'

'बहुत खूब!' कहकर मल्लाह नाव को किनारे की ओर ले जाने लगा।

'पत्नी के अचानक लौट आने के कारण गुड ईयर का प्रयोग उस दिन अधूरा ही रह गया होगा?' यह सवाल शशि ने किया।

'ऐसा नहीं हुआ।' अध्यापक महोदय ने अपनी बात पूरी करते हुए आगे कहा– 'पत्नी के लौटने पर उसकी नाराजगी का डर तो उसे था ही, साथ ही अजीब मनोदशा उस समय उसकी हो गयी थी। ऐसे में उसने अपने सामने रखे दोनों घोल आग में उड़ेल दिया। थोड़ी देर बाद वह खुशी और अचरज से चीख-चिल्ला उठा। उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं।'

'क्या हुआ?' तीनों लड़कों ने पूछा– 'क्या उसे सफलता मिल गई?'

'हाँ, दोनों घोल मिलकर आग में पड़ने से वे पक्के रबड़ के रूप में बदल गये थे।'

'अरे वाह! यह आविष्कार तो अनायास ही हो गया।' तीनों लड़कों के मुख से एक साथ निकल पड़ा।

'ऐसा ही समझ लो।' अध्यापक महोदय बोले।

नाव किनारे लग चुकी थी। सभी उतरे। अध्यापक महोदय ने मल्लाह को पैसे दिये। अब सभी घर की ओर बढ़ चले। ◆

बाल कविता : हरजीत निषाद

# मीठे बोल

तोता बहुत बोलता लेकिन,
उसकी ऊँची नहीं उड़ान।
चुप रहती है चील सयानी,
उड़ती खूब ऊँचे आसमान।।

कोयल मीठे बोल बोलती,
पाती वह सब का सम्मान।
काँव-काँव कौआ करता है,
कोई न सुनता उसका गान।।

जो बच्चे कटु वचन बोलते,
उनका संग दुखों की खान।
अच्छे गुण ही अपनाएं हम,
बन जाएंगे नेक महान।।

सदा प्यार से शीश झुकाएं,
मात-पिता-गुरु ईश समान।
इनकी आज्ञा मानते जायें,
हो जाये हर काम आसान।।

बाल कविता : दिनेश विजयवर्गीय

# शिक्षक

पाते सदा सम्मान सभी का,
भरे गुणों से प्यारे शिक्षक।

लिखना-पढ़ना हमें सिखाते,
ज्ञानी गुणी बनाते शिक्षक।

नैतिकता का मूल्य बताते,
सच्ची शिक्षा देते शिक्षक।

सीमित मूल्यवान समय है,
समय का मूल्य बताते शिक्षक।

सदा करें सम्मान सभी का,
आदर भाव जगाते शिक्षक।

निराश कभी न होने देते,
सदा प्रेरणा देते शिक्षक।

स्नेह प्यार सभी को देते,
सच्चे मित्र बन जाते शिक्षक।

कहानी : शिवचरण मंत्री

# वनपरी की दावत

एक थी वनपरी। वनपरी घने जंगल में रहती थी। उसका स्वभाव बड़ा अच्छा था। उसका रूप रंग भी बड़ा आकर्षक था। वह फूलों से बने रंग-बिरंगे सुन्दर फूलों के कपड़े पहनकर वन-लताओं के झूलों में झूला करती थी। हँसमुख स्वभाव की वनपरी कभी जंगल में रहने वाले हरिया बन्दर से हँसी-ठिठोली करती तो कभी सोनल चिड़िया के साथ बैठकर मीठे-मीठे गीत गुनगुनाती थी। इस तरह वनपरी के दिन हँसी-खुशी से गुजर रहे थे।

एक बार वनपरी ने वन के पशु-पक्षियों के लिए एक दावत का आयोजन किया। इस दावत, भोज में उसने हरिया बन्दर, सोनल चिड़िया, राजू भालू, मुनमुन गिलहरी, छोटू खरगोश आदि सभी वन्य पशु-पक्षियों को आमंत्रित किया।

दावत का समय शाम का था। अतः शाम होते ही हरिया बन्दर, सोलन चिड़िया, छोटू खरगोश, मुनमुन गिलहरी आदि सभी आमंत्रित मेहमान दावत स्थल की ओर चल पड़े। चलते-चलते हरिया बन्दर ने सोनल चिड़िया से पूछा– ''वनपरी किस खुशी में दावत दे रही है?''

''सम्भव है आज वनपरी का जन्मदिन हो।'' सोनल ने संक्षेप में उत्तर दिया।

दावत का समय हुआ। वनपरी ने आने वाले मेहमानों का मुस्कुराकर स्वागत किया।

आने वाले मेहमानों ने वनपरी द्वारा तैयार करवाये गये व्यंजनों यथा विभिन्न प्रकार के फल, विभिन्न प्रकार के उबले बीज, सुकोमल कच्चे पत्ते, शाखाएं, तनों, कोमल स्वादिष्ट बीज, फलों से तैयार किये पकवान बड़े चाव से खाए। सभी वन्य प्राणियों ने दावत में बनाये पकवानों की जी भर प्रशंसा की।

इसी बीच हरिया बन्दर ने वनपरी से पूछा– ''वनपरी, आज की दावत आपने किस खुशी

में दी है? क्या आज आपका जन्मदिन है?''

वनपरी बोली– ''हरिया, आप सभी वन्य प्राणी इस वन की बहुत सार-सम्भाल करते हैं। इसकी सुरक्षा करते हैं। इसको सुन्दर बनाते हैं। इस बात के लिए आपको ...''

''कैसे?'' एक प्रश्न गूंजा।

''हरिया आप और आपके साथी जंगल के खट्टे-मीठे फल खाते समय जाने-अन्जाने में उनकी गुठलियां, छिलके, बीज, आधे खाये फल इधर-उधर फेंक देते हैं। इधर-उधर फेंकी ये वस्तुएं जहाँ नष्ट हो जाती हैं वहीं कुछ शेष रहे बीज आदि समय पर अंकुरित हो जाते हैं और स्वत: ही बढ़कर वृक्ष लता बनकर वन की शोभा बढ़ाते हैं।'' वनपरी ने उत्तर दिया।

निपुण है। यह बुरे समय के लिए बीज, खाद्य तना और जड़ें आदि भूमि में गाड़ देती है। बुरे दिन या मुसीबत के समय जमीन में दबी चीजें, बीज, फल आदि खाकर अपना काम चला लेती है। पर कई बार मुनमुन अपनी भण्डारण की वस्तुओं को भूल जाती है या उनको काम में लेने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। इस तरह के दबे बीज समय आने पर उग जाते हैं, बढ़ते हैं और बड़े वृक्ष, लता, घास बनकर वन को सुरक्षित रखते हैं।

मुनमुन गिलहरी अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत खुश हुई।

वनपरी ने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा– ''राजू भालू जैसे बालों वाले जानवर भी

मुनमुन गिलहरी की ओर संकेत करके वनपरी ने बात आगे बढ़ाई, ''भाइयों और बहनों! यह मुनमुन वस्तु भण्डारण में बहुत

अपने बालों में कई प्रकार के बीज उलझाकर उन्हें दूर ले जाते हैं। इस प्रकार के बालों में उलझे बीज जब जमीन पर गिरते हैं तो

समय पर अंकुरित हो जाते हैं और कालान्तर में घने छायादार या कंटीले पेड़, झाड़ और झाड़ियां बनकर वन को हरा-भरा बनाने में बहुत मदद करते हैं।

भाइयों और बहनों, सोनल चिड़िया, कजरी बुलबुल से पक्षी और छोटू खरगोश आदि अपनी बीट एवं मल द्वारा खाये बीज को सुरक्षित निकाल देते हैं। समय आने पर और अनुकूल परिस्थितियों में ये बीज अंकुरित होकर पनपते हैं और वृक्ष बन जाते हैं, वन की वनस्पति का विस्तार करते हैं।''

वनपरी की बातें सुनकर सभी वन्य पशु-पक्षी बड़े भावविभोर हो गये। उनमें कुछ भला, नेक काम करने की भावना उत्पन्न हुई। वे परस्पर एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। सोनल चिड़िया ने मौका देखकर कहा– ''हम सब वन के पेड़, लता, झाड़ी, घास आदि के लिए वन के बड़े आभारी हैं क्योंकि वन्य जीवों के रहने, उनकी उदरपूर्ति के साधन वन ही है। वन की वस्तुओं तथा पत्ते, तिनके, घास आदि से हम अपने घोसले बनाते हैं। अतः हमारा भी दायित्व है कि हम वन सम्पदा यथा पेड़, लता, झाड़ी आदि की सुरक्षा करें। वन क्षेत्र को समृद्ध करें।''

हरिया बन्दर ने सोनल की बात का साथ देते हुए कहा– ''वनपरी, वृक्ष ही हमारे सबसे बड़े सहायक हैं। वृक्ष ही हमें चिलचिलाती धूप, कंपकंपाती सर्दी और घनघोर वर्षा से बचाते हैं। अतः हमें भी चाहिये कि हम वृक्षों की रक्षा करें।''

''मैं भी यही चाहती हूँ कि वनों की पेड़ों की सुरक्षा हो।'' वनपरी इतना कर चुप हो गई।

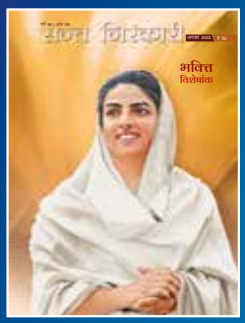


# सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

## इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी | पंजाबी | अंग्रेजी | मराठी | नेपाली | गुजराती | बांग्ला | तमिल | तेलुगू | कन्नड | ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

# एक नज़र

**स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें**

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

# विज्ञान प्रश्नोत्तरी

**प्रश्न : व्यक्ति की याद्दाश्त क्यों चली जाती है?**

**उत्तर** : मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ ऐसी कोशिकाएं होती हैं जो आँखों द्वारा देखी गई जानकारी का समायोजन करती हैं और उसका संग्रह करती हैं। जब मस्तिष्क पर कभी जबरदस्त चोट लग जाती है या कभी एक्सीडेंट वगैरह हो जाने पर ये कोशिकाएं सिकुड़ जाती हैं। इसको ही याद्दाश्त चला जाना कहते हैं।

**प्रश्न : नाल चुंबक किसी दंड चुंबक की तुलना में अधिक शक्तिशाली क्यों होता है?**

**उत्तर** : नाल चुंबक की आकृति U आकार की होती है और दंड चुंबक की आकृति सीधी। U आकृति के कारण नाल चुंबक के ध्रुव अधिक पास-पास रहते हैं जिससे चुंबक की शक्ति बढ़ जाती है और आकर्षण बल भी अधिक लगता है। दंड चुंबक के ध्रुव दूर-दूर होने से चुंबक की शक्ति अपेक्षाकृत कम रहती है। अत: नाल चुंबक अधिक शक्तिशाली रहते हैं।

**प्रश्न : हाथों को आगे-पीछे करने की ध्वनि तुम्हें क्यों नहीं सुनाई पड़ती है?**

**उत्तर** : जब तुम अपने हाथों को आगे-पीछे करते हो तो हाथों में कम्पन की आवृत्ति 20 से कम होती है। यह तो सर्वविदित है कि मनुष्य केवल 20 से 20,000 कम्पन प्रति सेकिण्ड के बीच की आवृत्ति वाली ध्वनि ही सुन सकता है। अत: तुम्हें हाथों को आगे-पीछे करने की ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती है।

**प्रश्न : फर्श पर लुढ़कती हुई गेंद दिशा क्यों बदल लेती है?**

**उत्तर** : वस्तु की दो स्थितियां होती हैं– विराम तथा गति। उसकी स्थिति में परिवर्तन असम्भव है। लुढ़कती हुई गेंद में गति होती है जब गेंद वायु के सम्पर्क में आती है तो उसकी दिशा में परिवर्तन हो जाता है क्योंकि वायु बल का कार्य करती है। इसी वजह से ही लुढ़कती हुई गेंद अपनी दिशा बदलने में सक्षम हो पाती है।

**प्रश्न : तेज धूप में मिट्टी की अपेक्षा पत्थर अधिक गर्म क्यों हो जाते हैं?**

**उत्तर** : पदार्थ दो प्रकार के होते हैं–

सुचालक और कुचालक। सुचालक पदार्थ ऊष्मा और ताप को शीघ्र व अधिक अवशोषित करते हैं जबकि कुचालक पदार्थ ऐसा नहीं कर पाते। पत्थर मिट्टी की अपेक्षा ऊष्मा का सुचालक है। गर्मियों के दिनों में यह मिट्टी की तुलना में अधिक और शीघ्र ऊष्मा अवशोषित करता है। अत: तेज धूप में पत्थर मिट्टी की तुलना में अधिक और शीघ्र ऊष्मा अवशोषित करता है। अत: तेज धूप में पत्थर मिट्टी की अपेक्षा अधिक गर्म हो जाते हैं।

लेख : राजकुमार जैन

# मन को लुभाती लीची

लीची गर्मियों के मौसम का सबसे मनमोहक और खूबसूरत फल है। सूरत और सीरत (गुण) दोनों में लीची लाजवाब है और जब स्वाद की आती है तो लीचियां मुँह में रसगुल्लों-सी मिठास घालेने लगती हैं।

लीची मूलत: एक चीनी फल हैं चीन के 'लोचू' नामक द्वीप मे इसका बहुतायत से उत्पादन होता है और यहीं से यह शनै: शनै: सारी दुनिया में फैली। सम्भवत: 'लीची' एकमात्र ऐसा फल है जिसे हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में एक ही नाम 'लीची' से पुकारा जाता है। इसका वैज्ञानिक नाम 'लीची चिनेंसिस' है तथा वनस्पति-जगत में लीची के पौधे को 'सेपिन्डेसी' समूह का माना जाता है।

रासायनिक दृष्टि से लीची एक पोषक रस से भरपूर है। फल में लगभग साठ प्रतिशत तक तरल रस होता है। ग्यारह प्रतिशत बीज, आठ प्रतिशत रेशा तथा तेरह प्रतिशत छिलका होता है। लीची में विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त इसमें प्राकृतिक शर्करा, जैविक अम्ल, प्रोटीन, विटामिन आदि पोषक तत्व भी पाए जाते हैं।

लीची की तासीर ठंडी व बलवर्द्धक होती है। ज्वर में प्यास शांत करने के लिए लीची के रस का उपयोग किया जाता है। लीची हृदय, मस्तिष्क और यकृत के लिए शक्तिदायक फल है। उदर तथा आँतों से सम्बन्धी रोगों में लीची के बीजों का औषधीय उपयोग होता है। इसके बीजों को तंत्रिका शूल जैसे रोगों के उपचार हेतु काम में लिया जाता है।

लीची के एक वयस्क वृक्ष की ऊँचाई 15 से 40 फीट के बीच होती है। पूरे वर्ष इस वृक्ष पर गहरे हरे रंग की करीब 6 इंच लम्बी पत्तियां लगी रहती हैं जो घनी और चमकदार होती हैं। इसमें फूल गुच्छों के रूप में लगते हैं जो प्रारम्भिक अवस्था में हरे रंग के होते हैं। एक गुच्छे में दो से लेकर बीस तक फल होते हैं। परिपक्व होने पर ये फल क्रमश: गुलाबी और सुर्ख लाल हो जाते हैं। फल का ऊपर छिलका दानेदार और भीतर से चि. कना और सफेद होता है। छिलके के नीचे दूधिया रंग का रसदार गूदा होता है जो खाने के काम आता है। गूदे के अन्दर मूंगफली के आकार का भूरे रंग का बीज निकलता है।

भारत में लीची का उत्पादन मुख्य रूप से उत्तरी बिहार, उत्तर प्रदेश, बंगाल के हुगली क्षेत्र में होता है। इसके अतिरिक्त पंजाब, त्रिपुरा, कर्नाटक, मध्यप्रदेश के कुछ भागों में लीची के बगीचे लगाए जाते हैं।

वैसे तो देश में लीची की पचासों किस्में प्रच. लित हैं किन्तु मुख्यत: नेफेलियम, चीनी लीची, कलकतिया लीची, बेदाना लीची और देशी लीची उल्लेखनीय हैं। इनमें बेदाना लीची सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। यह सुर्ख लाल रंग की पतले छिलके वाली होती है तथा इसके बीज का आकार बहुत छोटा होता है।

लीची की उन्नत किस्में विकसित करने हेतु व्यापक अनुसंधान जारी है और आशा की जानी चाहिए कि निकट भविष्य में लीची का उत्पादन देश के अधिकांश भागों में सम्भव हो सकेगा और इस अद्भुत मिठास भरे इस खूबसूरत फल को सहजता से पा सकेंगे। ◆

बाल कथा : भारतभूषण शुक्ल

# वास्तविक पहचान

काशी में गंगा तट पर एक मुनि का आश्रम था। अनेक शिष्य वहाँ वेद-वेदांग की शिक्षा ग्रहण करते थे। शिष्यों में एक का नाम 'दुष्कर्मा' था। सभी शिष्यों में वह सबसे अधिक आज्ञाकारी, बुद्धिमान तथा दयालु प्रवृत्ति का था। एक दिन उसके सहपाठी ने कहा– दुष्कर्मा, जरा एक श्लोक समझा दो, मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

अरे यह तो बहुत ही सरल है, अभी समझा देता हूँ।

दुष्कर्मा ने सहपाठी को श्लोक का अर्थ समझा दिया। उसके सभी मित्र उसे दुष्कर्मा के नाम से पुकारते थे। उसे बहुत बुरा लगता था। एक दिन उसने अपने गुरु से कहा– गुरुजी, मेरा कोई और नाम रख दीजिए। मुझे यह 'दुष्कर्मा' नाम अच्छा नहीं लगता। यह सुनकर गुरुजी मुस्कुराए।

फिर उन्होंने कहा– ठीक है बेटा! पहले तुम देशाटन (देश घूम आओ) कर आओ। जब वापस आओगे तब तुम्हारा नाम बदल देंगे। दुष्कर्मा गुरुजी के चरण स्पर्श करके देशाटन के लिए निकल पड़ा।

वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि कुछ लोग कंधे पर शव को ले जा रहे हैं। उसके पीछे कई लोग 'राम नाम सत्य है' कहते हुए चल रहे थे।

दुष्कर्मा ने एक आदमी से पूछा– भाई! मरने वाले का नाम क्या था?

उस आदमी ने कहा– 'अमर।'

–ऐं! अमर भी कभी मरता है?– दुष्कर्मा ने हैरानी से पूछा।

–तुम बड़े मूर्ख हो। नाम से तो मात्र व्यक्ति को पहचाना जाता है।– उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

दुष्कर्मा उसकी बात पर विचार करता हुआ दूसरे गाँव पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि एक स्त्री एक लड़की को बुरी तरह पीट रही थी। यह देखकर दुष्कर्मा

को दया आ गई। उसने पूछा– देवी! आप इसको क्यों पीट रही हैं?

–यह मेरी नौकरानी है। इसे पैसे देकर सामान लाने भेजा था और यह खाली हाथ वापस आ गई।– स्त्री ने क्रोधित मुद्रा में कहा।

दुष्कर्मा ने एक मुद्रा निकालकर स्त्री को दिया और कहा– कृपया इसे न मारें।

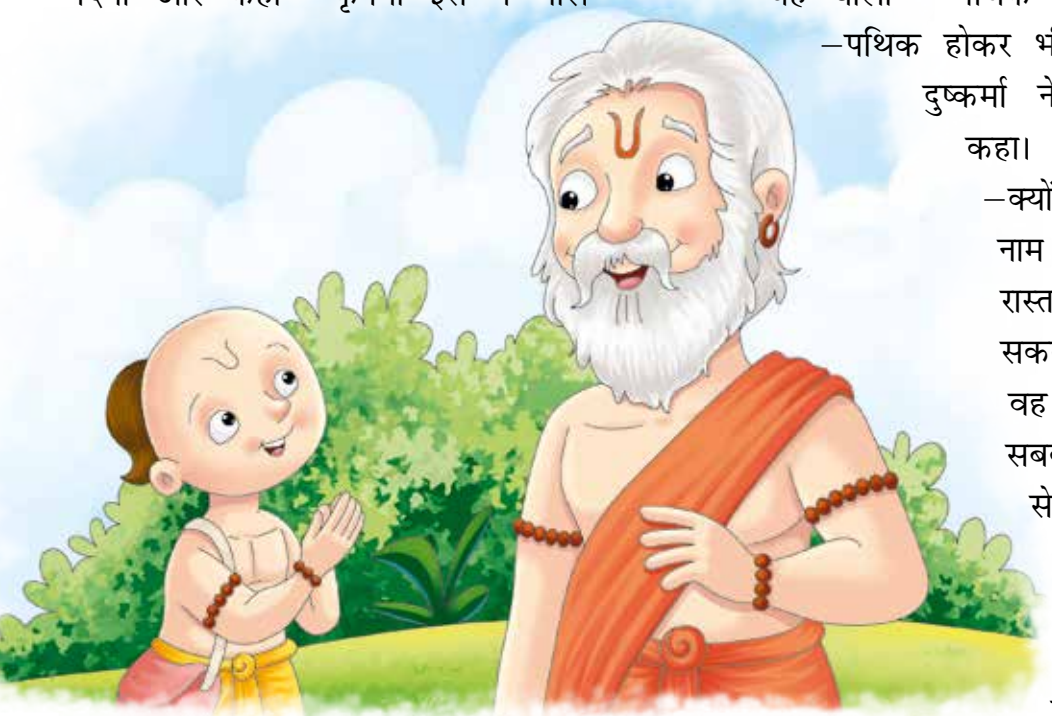

एक आदमी से दुष्कर्मा ने पूछा– इस लड़की का नाम क्या है?

आदमी बोला– उसका नाम 'लक्ष्मी' है।

–नाम तो अच्छा है लेकिन नौकरी दूसरे के यहाँ करती है।– दुष्कर्मा बोला।

–अजीब आदमी हो तुम; नाम तो केवल पहचान के लिए होता है, अर्थ से क्या होता है।– यह कहकर वह आदमी चल दिया।

–शायद यह ठीक ही कहता है पर...। अपने नाम से कुछ सन्तुष्ट होकर दुष्कर्मा गाँव छोड़कर काशी की ओर लौट पड़ा।

रास्ते में उसे एक आदमी मिला। उसने कहा– भाई मैं रास्ता भूल गया हूँ। मुझे काशी का रास्ता बता दोगे?

दुष्कर्मा ने कहा– मैं भी काशी जा रहा हूँ। मेरे साथ चलो।

दुष्कर्मा ने उससे पूछा– मित्र! तुम्हारा नाम क्या है?

वह बोला– 'पथिक' कहते हैं मुझे।

–पथिक होकर भी रास्ता भूल गये?– दुष्कर्मा ने व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा।

–क्यों मजाक करते हो? नाम से क्या लेना-देना। रास्ता तो कोई भी भटक सकता है।

वह फिर बोला– यह तो सबको पता है कि नाम से केवल व्यक्ति की पहचान होती है।

–तुम ठीक कहते हो मुझे यथार्थ समझ में आ गया।– दुष्कर्मा बोला।

काशी पहुँचते ही दुष्कर्मा अपने गुरुजी के पास पहुँचा।

–क्या अब भी तुम अपना नाम बदलना चाहोगे?– गुरुजी ने दुष्कर्मा से पूछा।

–गुरुजी, अब मैं समझ गया नाम से केवल व्यक्ति की पहचान होती है। मैं अपने वर्तमान नाम से ही सन्तुष्ट हूँ।

**किसी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके गुणों से होती है, न कि उसके नाम से।**

दो कविताएं : गौरीशंकर वैश्य

# सेब

गोल-गोल सा सुन्दर फल हूँ,
प्यारा-प्यारा सेब है नाम।

औषधीय गुण से हूँ युक्त,
कर देता रोगों से मुक्त।

खाने में मीठा सुस्वादु है,
पीला-लाल है रंग ललाम।

प्रतिदिन एक सेब जो खाए,
वह डॉक्टर के पास न जाए।

खनिज, विटामिन भरे हैं मुझमें,
रेशा, लौह मिले बेदाम।

ठीक रखूं स्नायु संस्थान,
हृदय के लिए हूँ वरदान।

कब्ज रोग में अति गुणकारी,
तन विकास में आता काम।

धो लें पर बिन छीले खाएं,
प्रतिदिन खाकर लाभ उठाएं।

# डेंगू मच्छर

डेंगू मच्छर है शैतान,
सबको करता है हैरान।

एडीज एजिप्टी इसका नाम,
पानी में करता आराम।
वजन में कुछ भारी होता है,
ऊँचे न भर सके उड़ान।।

बड़ा दुष्ट है दिन में काटे,
घर भर में भरता फर्राटे।
बचना है डेंगू बुखार से,
काफी रखना होगा ध्यान।।

पूरी बांह के पहने कपड़े,
तन को ढके, न पालें लफड़े।
घर-बाहर की रखें सफाई,
सोएं मच्छरदानी तान।।

डेंगू ले जब पांव पसार,
उल्टी-दस्त हों, तेज बुखार।
अस्पताल में जाँच कराकर,
नियमित औषधि मात्र निदान।।

# किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : विकास कुमार

कितनी दूर है। हम घर से बहुत दूर आ गये हैं।
बस आ ही गए।
आहा! हम आ गये।
देखो, अब मैं आवाज़ लगाकर दिखाता हूँ।
अरे वाह! आवाज़ तो वापस आती है। मैं भी देकर देखूँगी।

टमकू आवाज़ देते-देते कुएं में गिर गया।
बचाओ-बचाओ...
मैं अब क्या करूँ कहाँ जाऊँ। किस तरह टमकू को बाहर निकालूं। काश! मैंने मम्मी की बात मान ली होती।
रस्सी मिल गई है जल्दी से टमकू को बाहर निकालती हूँ।
रस्सी पकड़ो टमकू मैं खींचती हूँ। तुम बाहर आ जाओगे।

टमकू मेरी मम्मी बहुत नाराज होगी। हमें बहुत देर हो गई। आज के बाद मैं मम्मी का कहना नहीं टालूंगी।
घर आ गया। टमकू तुम भी अपने घर जाओ।
माँ
खट्-खट्
माँ! मुझे माफ़ कर दो। आज के बाद मैं कभी ऐसा नहीं करूँगी।
ठीक है। पर इसे हमेशा याद रखना।

संकलनकर्ता : विभा वर्मा

# कभी न भूलो

❖ जो ज्ञान मन को शुद्ध करता है, वही ज्ञान है। शेष अज्ञान है।

– **रामकृष्ण परमहंस**

❖ कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है। वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। – **अरविन्द घोष**

❖ अन्याय और अत्याचार करने वाला उतना दोषी नहीं है जितना उसे सहन करने वाला।

– **बाल गंगाधर तिलक**

❖ पाप मनुष्य के चेहरे पर झलकता है।

– **मुंशी प्रेमचंद**

❖ पश्चाताप ही पाप धोने का साबुन है।

– **हेयर**

❖ अपराधी अपने सिवा सभी को दोषी ठहराता है। – **डेल कारनेगी**

❖ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा।

– **स्वेट मार्डेन**

❖ जिसके साथ सत्य है, वह अकेला होता हुआ भी बहुमत में है। – **शेक्सपियर**

❖ प्रार्थना आत्मा की पुकार है इसे करो।

❖ जो अपने हिस्से का काम किए बिना ही भोजन पाते हैं वे कामचोर हैं।

– **महात्मा गाँधी**

❖ उत्तम शिक्षा कहीं से भी मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। – **चाणक्य**

❖ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता।

– **चिल्सन**

❖ अपने आपको वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है।

– **हार्ट स्वेन्शर**

❖ प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भण्डार है पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। – **हरिऔध**

❖ प्रेम की शक्ति घृणा की शक्ति की अपेक्षा अनन्त गुणी अधिक प्रभावशाली है।

– **स्वामी विवेकानन्द**

❖ विद्वानों की संगति से ज्ञान मिलता है, ज्ञान से विनय, विनय से प्रेम और लोग प्रेम से क्या नहीं प्राप्त कर सकते।

– **साहित्य दर्पण**

❖ संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जो नीति का जानकार नहीं है किन्तु उसके प्रयोग से लोग विहीन होते हैं। – **कल्हण**

❖ परोपकार में लगे हुए सज्जनों की प्रवृत्ति पीड़ा के समय भी कल्याणमयी होती है।

– **बाणभट्ट**

❖ दुनिया में सब कुछ दोबारा मिल सकता है पर माँ-बाप नहीं मिलते।

❖ अन्याय सहने वालो की अपेक्षा अन्याय करने वाला अधिक दुखी होता है।

– **सिसरो**

कहानी : राज जैन

# अनोखी सजा

छमछम वन दूर-दूर तक 'दूध का दूध और पानी का पानी' जैसे न्याय के कारण प्रसिद्ध था। यहाँ का न्यायाधीश झबरू चीता बहुत ही निडर, ईमानदार और न्यायप्रिय था। मामला राजा से सम्बन्धित हो या किसी गरीब से, बिना किसी पक्षपात के वह न्याय करता था।

एक बार जानू भालू जो एक खूंखार डाकू था, पकड़ा गया और झबरू की अदालत में पेश किया गया। कार्यवाही के दौरान पता चला कि उसने कई अपराध किये थे पर बिना सबूत के वह हमेशा बचता रहा था। इस बार होलू हाथी के घर से उसे रंगे हाथों ही दबोच लिया गया था। तमाम सबूत सामने होने के कारण किसी तरह की सफाई की जरूरत ही नहीं थी।

वन पुलिस ने तुरन्त ही उसे सलाखों के पीछे पहुँचा दिया। वहाँ उसे बार-बार झबरू का चेहरा दिखाई देने लगा जिसकी वजह से वह कैद में था। उसका अपराधी दिमाग जोरों से काम करने लगा। झबरू को तबाह करने से लेकर मारने तक के कई तरीके उसने सोचे। उसकी आँखें गोल-गोल घूमने लगीं। एक चौड़ी मुस्कुराहट उसके चेहरे पर फैलती चली गई। क्षणभर के लिए तो वह भूल ही गया कि वह उम्र कैद की सजा का कैदी है।

सारे दांव-पेच खेलने में तो वह चतुर था ही। उसने धैर्य और बुद्धिमानी से काम लिया। चार-पाँच दिन में ही एक सिपाही से उसने अच्छी दोस्ती कर ली। उसे धन का प्रलोभन देकर सुनहरे सपने दिखाए। सिपाही उसकी बातों में आ गया। एक दिन मौका मिलते ही चतुर जानू उस सिपाही की मदद से फरार होने में सफल हो गया।

झबरू से बदला लेने के लिए उसका खून खौल रहा था। चौकन्ना रहते हुए उसका पूरा प्लान झबरू के इकलौते बेटे बबरू का अपहरण करने का था। एक दिन शाम के समय बबरू

को बगीचे में अकेला देखकर उसने उसे उठा लिया। बबरू छोटा था। डर के मारे जैसे ही वह चिल्लाया। गार्ड ने उसे देख लिया। तेजी से भागते हुए जानू को गार्ड ने पीछा करते हुए गोली मार दी फिर भी किसी तरह वह अपने घर तक पहुँच ही गया। गोली उसकी पीठ पर लगी थी। गोली तो उसने निकाल ली पर उसका जख्म उसे बहुत तकलीफ दे रहा था।

अब तक डरा सहमा बबरू सब कुछ देख रहा था। चारों तरफ से गेट बंद करके जब जानू लेटा तो थकान के कारण उसे नींद आ गई। बबरू को जोरों की भूख लगी थी। वह धीरे-धीरे अन्दर की तरफ बढ़ा। दो कमरे पार करने के

बाद जैसे ही वह तीसरे कमरे में पहुँचा उसे टीवी दिखाई दिया। उसने उसे ऑन कर दिया। 'स्पेशल न्यूज' बुलेटिन चल रहा था। खूंखार अपराधी के फरार होने से बबरू के अपहरण तक की सारी बातें न्यूज के माध्यम से बबरू समझ गया। वह भी अपने पापा की तरह निडर था।

किचन में जो कुछ रखा था, उसने खा-पी लिया और बाहर आ गया। जानू अब भी सोया था। उसकी पीठ से थोड़ा-थोड़ा खून अब भी टपक रहा था। उसने एक कॉटन को गीला करके घाव को साफ करने की कोशिश की। पीठ पर नरम हाथों का स्पर्श पाकर जानू की आँख खुल गई। बबरू ने बहुत ही प्यार भरे शब्दों में पूछा– 'अंकल, बहुत दर्द हो रहा होगा न। गार्ड को ऐसा नहीं करना चाहिए था। ऐसे में तो कोई मर भी सकता है। मैं जब उससे मिलूंगा तो उसे समझाऊंगा। आप दवा बता दीजिए मैं सफाई करके लगा देता हूँ।' छोटे से बच्चे के मुँह से इतनी अच्छी बातें सुनकर जानू को उस पर दया आ गई। 'तुम्हें भूख लगी होगी, जाओ, अन्दर कुछ खाने को होगा खा लो।' वह बोला।

बबरू अन्दर गया और जानू के लिए कुछ ले आया। 'अंकल मैंने तो पहले ही खा लिया था। अब आप भी खा लीजिए।'

बबरू के हर शब्द जानू पर जादू-सा असर कर रहे थे। बरसों बीत गए जब से वह डाकू बना। प्यार, स्नेह, ममता सभी को भूल-सा गया था। जिन हालात का शिकार होकर वह अपराध जगत में आया था वो सारी घटनाएं एक-एक करके उसकी आँखों के सामने घूम गईं। अपने परिवार को खोने के बाद बदले की भावना उसमें भी आ गई और एक गिरोह में शामिल होकर वह डाकू बन गया। तब से अब तक ऐसी ही जिन्दगी वह जी रहा था।

उसका मन उसे बार-बार धिक्कारने लगा। वह सोचने लगा– 'मैंने गलत काम किया तो मुझे सजा मिली। इस बच्चे को इसके मम्मी-पापा से मुझे अलग नहीं करना चाहिए था।' उसकी गहरी सोच बबरू ने तोड़ी।

–क्या सोच रहे हैं अंकल? पहले खाना खा लीजिए।

आवाज सुनकर वह एकदम चौंक गया। उसने अपने आंसू पोंछते हुए बबरू के सिर पर प्यार से हाथ फेरा और बोला– 'मैं ठीक होते ही

तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आऊँगा ...' उससे अधिक नहीं बोला गया। देशी जड़ी-बूटियों से शीघ्र ही उसका जख्म भर गया। इस बीच बबरू ने उससे बहुत प्यारी-प्यारी बातें कीं और जानू ने भी उसे अपने बेटे से भी ज्यादा प्यार देकर रखा। लेप लगाने से दवा देने और हर छोटे-छोटे काम में जानू के साथ बबरू लगा रहा। इतनी निकटता से खूंखार माने जाने वाले डाकू का मन इतना पिघल गया कि उसने अपनी जिन्दगी बदलने का मन ही मन फैसला कर लिया।

अगले दिन वन के गुप्त रास्तों से वह बबरू को उसके घर ले गया। घर के पीछे से वे अन्दर दाखिल हुए। वहाँ उसने देखा झबरू अपनी रोती हुई पत्नी को समझाते हुए कह रहा था– 'तुम्हारे खाना-पीना छोड़ देने से जानू जैसा अपराधी डाकू बबरू को घर नहीं छोड़ जाएगा। मैं कोशिश कर रहा हूँ न उसे ढूंढने की।' इसी बीच दरवाजे पर दस्तक के साथ ही बबरू की आवाज गूंजी।

'आपको कहीं ढूंढने जाने की जरूरत नहीं है। जानू अंकल खुद मुझे छोड़ने आए हैं।' इसके साथ ही जानू को जबरदस्ती खिंचते हुए वह अन्दर ले आया।

बबरू को इतना खुश देखकर झबरू और उसकी पत्नी को खुशी के साथ ही आश्चर्य भी हुआ।

वह कुछ समझ पाते या कुछ कहते इसके पहले ही जानू आगे बढ़ा और अपने हथियार उनके पैरों में रखकर रोते हुए बोला– 'आज से नहीं अभी से मैं सब बुरे काम करना छोड़ रहा हूँ। आपके बबरू ने मेरी आँखें खोल दी हैं। जो खुशी अपार धन-दौलत और ऐशोआराम से मुझे कभी नहीं मिली वह चंद दिनों में बबरू के साथ ने दी है। मुझसे जो अपराध हुए हैं उनकी जो भी सजा आप मुझे देना चाहें दे सकते हैं।' इतना कहकर आंसू पोंछते हुए वह दूर हट गया।

फिर उसकी पूरी कहानी सुनने के बाद झबरू ने निर्णय लेते हुए कहा– सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। तुमने अपराध किये हैं। सजा तो हम तुम्हें देंगे ही। आज से तुम्हारी सजा है तुम आस-पास के बच्चों को प्रेरक कहानियां सुनाकर ऐसी शिक्षा दोगे कि उनकी पीढ़ियों तक कोई चोर, डाकू या हत्यारा न बनें। यह बच्चे ही हमारे वन का सुनहरा भविष्य हैं। हो सकता है किन्ही हालत का सामना इन्हें भी करना पड़े। तुम्हारा काम ऐसी उलझनों से उन्हें कैसे निबटना है बस, यही समझाना है और हाँ, तुम्हारे दुश्मनों की भी इस वन में कमी नहीं है इसलिए अब तुम कहीं नहीं जाओगे, यहीं रहोगे बबरू के साथ।

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन

# लेसर किरणें
## अलादीन का चिराग

विज्ञान के अनेकानेक आविष्कारों में 'लेसर' का आविष्कार बीसवीं सदी की एक अति महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लेसर की उपयोगिता सीमातीत है। विज्ञान के अन्य आविष्कारों की भांति जहाँ यह चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक चमत्कार साबित हुई है, वहीं इसके संहारक और विध्वंसात्मक इस्तेमाल की आशंकाएं भी बहुत व्यापक हैं। वस्तुतः यह बहुत ही सम्भावनाओं से भरा आविष्कार है।

इस्पात की भारी-भरकम चद्दरों को पलभर में छेद देने वाली लेसर मनुष्य की आँख जैसे कोमलतम अंग की शल्य चिकित्सा भी उसी दक्षता से कर पाने में सक्षम है।

'लेसर' नाम अंग्रेजी के 'एल.ए.एस.ई.आर.' (LASER) अक्षरों से बना है, जिसका पूर्ण रूप है 'लाईट एम्प्लीफिकेशन बाई सिटुमलेटेड एमिशन ऑफ रेडिएशन'। इसके सर्वप्रथम आविष्कार का श्रेय अमेरिकी वैज्ञानिक टी.एच. मैमन को जाता है, जिन्होंने 1917 में महान वैज्ञानिक आइंस्टीन के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को आधार बनाकर यह अजूबा कर दिखाया।

लेसर प्रकाश का ही एक रूप है, किन्तु जहाँ साधारण प्रकाश का निर्माण सात रंगों के मिश्रण से होता है, वहीं लेसर किरणों में केवल एक रंग होता है। साधारण प्रकाश की प्रकृति चारों तरफ फैलने की होती है जबकि लेसर एक ही दिशा में चलती है और इसकी सारी शक्ति एक पतली धार में संग्रहित हो जाती है जो कुछ ही मिलीमीटर चौड़ी होती है। यदि लेसर के प्रकाश को एक सेंटीमीटर के दस हजारवें भाग के बराबर स्थान पर केन्द्रित किया जाए तो लेसर-प्रकाश की तीव्रता सूर्य के प्रकाश के मुकाबले लाखों गुना अधिक हो जाती है। पृथ्वी से दो लाख चालीस हजार मील दूर स्थित चन्द्रमा के धरातल पर एक पैनी लेसर किरण समूह को भेजा गया। यह रास्ता उसने मात्र एक सेकिंड में तय किया और इस किरण ने चन्द्रमा के लगभग दो वर्ग मील के क्षेत्र को प्रकाशमान कर दिया।

सन् 1960 में टी.एच. मैमन ने कृत्रिम लाल मणि से एक हाथ में पकड़े जा सकने वाला पहला लेसर बनाया। वह रूक-रूककर लाल प्रकाश देता है। इस कृत्रिम लाल मणि की छड़ के दोनों सिरों को चमकदार दर्पण जैसी पॉलिश दे दी जाती है जिससे एक सिरा तो दर्पण की तरह प्रकाश को पूर्णतः परावर्तित करे तथा दूसरा सिरा आंशिक रूप से पारदर्शक रहे। इस मणि के इर्द-गिर्द एक ट्यूब लगाई जाती है जिसमें विद्युत-विसर्जन के माध्यम से प्रकाश पैदा किया जाता है। यह सौरमंडल की सर्वाधिक चमकदार रोशनी होती है तथा एक सेकिंड के अल्पसमय में तीस किलोवाट शक्ति की धड़कन उत्पन्न करती है।

कृत्रिम लाल मणि के अलावा अब तक सौ से अधिक पदार्थों में लेसर प्रकाश उत्पन्न करने में सफलता मिल चुकी है। इसमें कांच, प्लास्टिक तथा द्रव व गैसें शामिल हैं। विभिन्न लेसर में आर्गन लेसर, रूबी लेसर, अमोनियम लेसर, कार्बनडाइऑक्साइड लेसर, येग लेसर आदि प्रमुख हैं। लेसर अधिकांशतः गैस लेसर के रूप में ही होती हैं। हिलियम तथा नियोन लेसर से हमें लाल

धार प्राप्त होती है। हिलियम केडियम लेसर से नीली और आरमोन इयन लेसर से हरी धार प्राप्त होती है।

लेसर एक बहुआयामी खोज है। यदि हम चिकित्सा के क्षेत्र में लेसर की उपयोगिता को देखें तो पाएंगे कि इस आविष्कार ने सर्जरी के क्षेत्र में सचमुच चमत्कार कर दिखाया है। आँख जैसे नाजुक और जटिल अंग के रोगों की शल्य-चिकित्सा में लेसर किरणों का सफलतापूर्वक उपयोग किया जाने लगा है। आँख के 'रेटिना' के ऑपरेशन में लेसर किरणों की उपयोगिता ने सचमुच क्रांति कर दी है। यह अति-सूक्ष्म और जोखिम भरा ऑपरेशन अब बिना किसी चीर-फाड़ के आसानी से किया जा सकता है। नाक, कान के अंदरूनी भागों में जहाँ सर्जन का चाकू नहीं पहुँच सकता, अब लेसर द्वारा ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध है। इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें खून तक नहीं निकलता क्योंकि हरी लेसर किरणें खून को ऊपर ही जमा देती हैं। इसके अतिरिक्त, दिमाग तथा रीढ़ की हड्डी के ऑपेरशन, आँतों की सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी, कैंसर आदि बीमारियों के उपचार में लेसर का उपयोग हो रहा है। कोलेस्ट्रोल आदि पदार्थों से धमनियों में पैदा हुए अवरोध को भी लेसर किरणों से दूर किया जाता है। किडनी-स्टोन को बिना ऑपरेशन के लेसर किरणों से गला दिया जाता है।

औद्योगिक क्षेत्र में भी लेसर की उपयोगिता अद्वितीय साबित हुई है। यह धातु को जोड़ने, काटने, छेद करने, टांका लगाने आदि कार्य में प्रयुक्त होती है। यह हवाई जहाज को सही मार्ग पर रखने में भी काम आती है। यह हीरा तथा प्लेटिनम जैसे सख्त व कठोर पदार्थों को

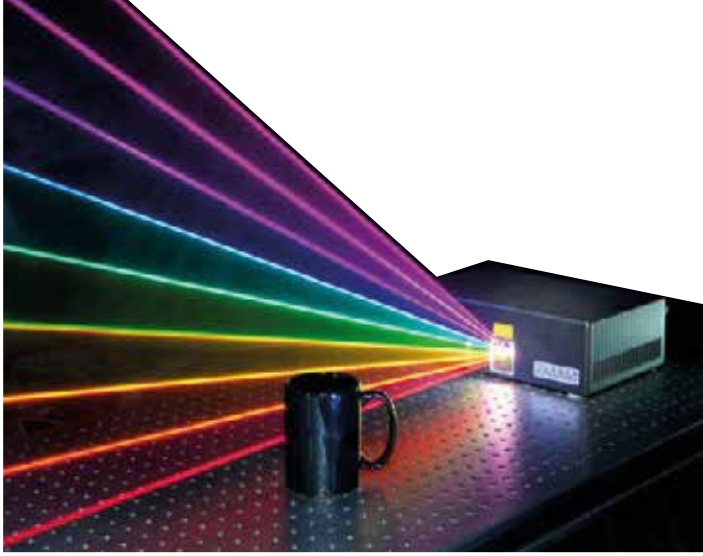

काटने व उनमें छिद्र करने का कार्य कुशलता से करती है। आज पुलों तथा गगनचुंबी इमारतों की सीध लेने का कार्य भी लेसर किरणों की मदद से किया जाता है।

अंतरिक्ष अनुसंधान अभियान में भी लेसर का प्रयोग बहुत ही कामयाब रहा है। इससे तारों और ग्रह-नक्षत्रों की दूरी, स्थिति तथा उपलब्ध तत्वों आदि की मात्रा पता लगाने में मदद मिलती है। इसके अलावा मौसम-विज्ञान, भूकम्प की जानकारी, कम्प्यूटर, प्रदूषण नापने, होलोग्राम विधि से त्रिआयामी तकनीक का विकास जैसे न जाने कितने काम लेसर द्वारा किए जा रहे हैं।

लेसर का आविष्कार इतने क्षेत्रों में कारगर सिद्ध हुआ है, जितना कि कोई अन्य आविष्कार नहीं हुआ है। इसके विस्तृत कार्य-क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए कई लोग 'अलादीन का चिराग' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में लेसर ने उन अनेकों आश्चर्यों को साकार कर दिया है जिन्हें कल तक असम्भव या मात्र कपोल कल्पना माना जाता था। अभी भी लेसर के उपयोग की अनन्त सम्भावनाएं हैं जिन्हें पूरी करने में दुनियाभर के वैज्ञानिक जी-जान से जुटे हुए हैं।

# पढ़ो और हँसो

दो दोस्त आपस में बात कर रहे थे।

चिंटू : एक लॉजिक मैं आज तक समझ नहीं पाया।

पिंटू : क्या?

चिंटू : 'धीरे बोलो दीवारों के भी कान होते हैं।' मान लो कान होते भी हैं तो जुबान नहीं होती है न... सुन भी लिया तो किसी को बताएंगे कैसे?

डॉक्टर: अच्छे स्वास्थ्य के लिए रोजाना व्यायाम करना चाहिए। हमेशा फिट रहोगे।

पप्पू : जी रोजाना मैं क्रिकेट और फुटबॉल खेलता हूँ।

डॉक्टर: कितनी देर खेलते हो?

पप्पू : जब तक मोबाइल की बैटरी खत्म नहीं हो जाती।

एक आदमी रेल में एक बड़े से संदूक को ऊपर वाले बर्थ पर रखने लगा तो नीचे बैठी महिला बोली– इसको किसी और जगह रखिए। कहीं यह मेरे सिर पर न आ गिरे।

आदमी ने जवाब दिया– चिन्ता न करें, इसमें टूटने वाली कोई चीज नहीं।

मच्छरों से तंग आकर गोलू अपनी माँ के साथ चारपाई के नीचे सो रहा था। इतने में एक जुगनू आ गया।

गोलू ने माँ से पूछा– माँ यह क्या चमक रहा है?

माँ ने कहा– चुप रहो! लगता है मच्छर हमें टॉर्च लेकर ढूंढ रहे हैं।

आधी रात को एक व्यक्ति ने डॉक्टर के घर फोन किया– आप घर आकर देखने की कितनी फीस लेते हैं?

–पाँच सौ रुपये।– डॉक्टर बोला।

–और क्लीनिक पर देखने की?– व्यक्ति ने पूछा।

–सौ रुपये।

–ठीक है फिर आप तैयार होकर क्लीनिक पहुँचिए मैं वहीं आ रहा हूँ।– व्यक्ति बोला।

पत्नी : (वैज्ञानिक पति से) अजी सुनिये।

पति : क्या है?

पत्नी : 'पानी बचाओ' संगोष्ठी में मत जाइएगा।

पति : क्यों?

पत्नी : चाँद पर पानी मिल गया है।

बस स्टैंड पर एक व्यक्ति अपनी पत्नी और तीन बच्चों के साथ बहुत देर से खड़ा था। काफी देर बाद एक आदमी उसके पास आया और बोला– क्यों भाई, जब से तुम यहाँ आये हो, तब से न जाने कितनी बसें आयीं और चली गईं। पर तुम किसी भी बस में नहीं बैठे?

वह व्यक्ति बोला– क्या करूँ? भाई साहब! जो भी बस आती है। उस पर लिखा होता है– 'हम दो, हमारे दो' पर हम तो पाँच हैं।

दुकानदार : (सेल्समैन से) कोई भी चीज बेचते हुए उसके गुणों का बार-बार बखान करो। एक बार से काम न चले तो दूसरी बार बताओ। यहाँ तक दोहराओ कि ग्राहक के दिमाग में तुम्हारी बात बैठ जाए। अच्छा बताओ तुम क्या कहना चाहते हो?

सेल्समैन : मैं कहना चाहता हूँ कि आप मेरा वेतन बढ़ा दीजिये... बढ़ा दीजिये... बढ़ा दीजिये... ।

ऑपरेशन सफल होने के बाद मरीज को डॉक्टर ने कहा– अब तुम खतरे से बाहर हो, फिर भी तुम्हारे हाथ-पांव क्यों कांप रहे हैं?

मरीज बोला– दरअसल, डॉक्टर साहब, मैं जिस ट्रक से टकराया था उस ट्रक के पीछे लिखा था– 'फिर मुलाकात होगी।'

मालिक : (नौकर से) रामू मैं नदी में डूब रहा हूँ।

रामू : मालिक अभी न डूबिए, आपने मेरा तीन महीने का वेतन देना है।

सोनू 6 महीने के एक बच्चे के रोने की आवाज रिकॉर्ड कर रहा था।

मोनू : (सोनू से) तू यह क्या कर रहा है?

सोनू : अरे यार, मैं इस बच्चे की आवाज रिकॉर्ड कर रहा हूँ।

मोनू : क्यों?

सोनू : जब ये बड़ा होगा, कम से कम मैं इससे पूछ तो पाऊँगा कि वह क्या बोलना चाह रहा था?

– निशा चौधरी (जम्मू)

# गाँव को डूबने से बचाने वाला बालक

हालैण्ड देश का कुछ भाग समुद्र की सतह से नीचा है इस कारण कभी-कभी समुद्र का जल आकर उस भाग में बसे गाँवों को डुबो देता था। इससे बचने के लिए वहाँ के निवासियों ने समुद्र के किनारे एक ऊँचा बाँध बना रखा था। फिर भी कभी-कभी जल का प्रवाह इतना तेज होता कि वह बांध को तोड़ देता।

एक दिन सर्दियों के मौसम में एक लड़का उस बाँध के पास से होकर जा रहा था। उसने देखा कि बांध में से धीरे-धीरे पानी निकल रहा है। पहले तो उसने सोचा कि दौड़कर गाँववालों को बता दूँ पर फिर उसने सोचा कि गाँववालों के आने तक छेद बड़ा हो जायेगा और पानी को रोकना मुश्किल होगा। पानी नहीं रूका तो सबकुछ नष्ट हो जायेगा। मुझे तुरन्त ही कुछ करना होगा।

इसके बाद उसने जो कपड़े पहने हुए थे उनको उतारा और उन्हें इकट्ठा करके छेद के मुहाने पर लगा दिया और अपने हाथों से दबा दिया। सारी रात उसने इसी प्रकार पानी को रोके रखा। एक तो सर्द रात थी, दूसरे वह ठण्डी जगह पर खुले आसमान में बैठा था और शरीर पर कोई कपड़ा भी नहीं था। इस कारण उसे सर्दी भी बहुत लग रही थी। पर वह इन सबकी परवाह न करते हुए वह पानी को रोके वहाँ बैठा रहा।

सवेरे किसी व्यक्ति ने उसे बाँध के पास बैठे और बाँध के छेद में हाथ डाले देखा तो पूछा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तो लड़के ने लड़खड़ाती आवाज में कहा कि 'यहाँ से पानी निकल रहा है, इसको मैंने रोक रखा है, नहीं तो गाँव डूब जायेगा।' इससे अधिक वह बोल न पाया क्योंकि एक तो वह रातभर का भूखा-प्यासा और थका हुआ था। दूसरे ठण्ड के कारण वह बेसुध-सा हो गया था। इसके बाद उस आदमी ने उसका हाथ हटाकर अपने हाथ को बांध के छेद में डाल दिया और सहायता के लिए पुकार मचाई। थोड़ी ही देर में लोग वहाँ आ गये और उन्होंने पानी निकलने की जगह को अच्छी तरह से बन्द कर दिया।

लड़के को लोगों ने बहुत आदर-सम्मान दिया क्योंकि उसने स्वयं को खतरे में डालकर गाँव को डूबने से बचाया था।

-प्रस्तुति : किशोर डैनियल

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

# पेड़ लगाओ

बच्चो मिलकर पेड़ लगाओ,
हरी-भरी धरती बनाओ।

पेड़ मनुज का जीवन दाता,
बात यही सबको समझाओ।

शुद्ध रहे घर-घर का आंगन,
पेड़ लगाकर अगर सजाओ।

खार सदा रक्षक बन रहते,
फूलों को यह बात बताओ।

घर-घर पेड़ लगाओ मिलकर,
ऐसी पावन अलख जगाओ।

पेड़ हमें दे अन्न-धन जीवन,
पेड़ लगाओ विश्व बचाओ।

बाल कविता : गौरीशंकर

# फूल

उपवन में मुस्काते फूल,
मधुर सुगंध लुटाते फूल।

सुन्दर रंग-बिरंगे लगते,
सबको पास बुलाते फूल।

आई तितलियां आए भौरे,
मधुरस इन्हें पिलाते फूल।

भौरे सुना रहे हैं गाना,
झूम-झूम इठलाते फूल।

कांटों में रहना है सीखा,
कभी नहीं भय खाते फूल।

रूप-रंग हैं अलग-अलग पर,
सबका साथ निभाते फूल।

## जून अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **अंकुश गुप्ता** — 10 वर्ष
   3012, चेत सिंह नगर,
   10/4 गिल रोड, लुधियाना (पंजाब)

2. **हिमांशु सिंह** — 15 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : सरैया,
   जिला : देवरिया (उ.प्र.)

3. **अम्बर लाम्बा** — 9 वर्ष
   412, बी-12, अभिनव अपार्टमेंट,
   वसुंधरा एंक्लेव, दिल्ली

4. **आलिया** — 12 वर्ष
   गाँव व पोस्ट : उरैन,
   जिला : लखीसराय (बिहार)

5. **अवनीश सिंह** — 13 वर्ष
   मुलायम नगर, कर्वी,
   जिला : चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

### इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

आनन्दित (सेक्टर-39, लुधियाना), इनायत (पेरिस टाउन, अमृतसर), नवनीत (अररिया बाजार, जौनपुर), मानवी (मेन बाजार, लहरागागा), आरूषि (सेक्टर-56, चंडीगढ़), यक्षिका (शांतिपुरम, प्रयागराज), कृष्णा (अजमेर), चिराग, मोहित गुरनाणी, मुस्कान, सुमित रूपाणी, अनंत, शिव बम्बानी, कृष्णा, नंदिनी, हार्दिक, लहर चांदनी मूलचंदानी, निशिका, जय मनवाणी, मुस्कान लालवाणी, गौरी तेहलाणी, रेशमा रामचंदानी, प्राची राजाई, द्विज कमनाणी (गोधरा), खुशबू (रविग्राम, रायपुर), यन्ना (विकास विहार, रायपुर)।

## सितम्बर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **10 अक्टूबर** तक कार्यालय **'हँसती दुनिया'**, निरंकारी कॉम्पलेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **दिसम्बर अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। 'ई-मेल' या 'व्हाट्सएप्प' से नहीं।

# रंग भरो

नाम : ..... आयु : .....

पिता का नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन कोड : .....

# आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया मासिक का वर्षों से नियमित पाठक हूँ।

मैं और मेरा परिवार इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ते हैं। इस पत्रिका में मुझे विशेष रूप से 'सबसे पहले' एवं कहानियां तथा 'पढ़ो और हँसो' बहुत अच्छे लगते हैं। यह पत्रिका बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है।

यह पत्रिका विशेष रूप से छोटे बच्चों तथा विद्यार्थियों के लिये लाभदायक है। मैं भी एक विद्यार्थी हूँ। मुझे इससे काफी अच्छी जानकारी एवं शिक्षा मिलती है।

मैं यह चाहता हूँ कि हँसती दुनिया संसार के कोने-कोने में पहुँचे जिससे सभी इससे लाभ उठा सकें। – **सनी कुमार (फिरोजाबाद)**

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। जुलाई माह की पत्रिका प्राप्त हुई।

इसके सभी प्रेरक-प्रसंग प्रेरक एवं शिक्षाप्रद हैं। सभी कविताएं विशेषतौर पर 'इन्द्रधनुष कैसे बन जाता' और 'धरती का शृंगार है पेड़' अच्छी लगीं। 'दृढ़ निश्चय' और 'मगर और मछली' कहानियों में आत्मविश्वास झलकता है। इससे यह सीख मिलती है कि मुसीबत के समय हिम्मत नहीं हारनी चाहिए और बुद्धि से काम लेना चाहिए।

यह पत्रिका बच्चों के लिए शिक्षाप्रद एवं अनमोल तोहफा है।

– **सौरभ कुमार (माधौगंज, हरदोई)**

जानकारी : सुष्मिता

# दूरबीन की खोज

बच्चों! तुमने दूरबीन तो देखी होगी। इसका उपयोग आमतौर पर जहाजों में होता है। दूरबीन से ही हम चाँद और सितारों को देखकर उनके बारे में जान सके हैं। दूरबीन का आविष्कार किसी अज्ञात व्यक्ति ने किया था परन्तु इसका पहला पेटेंट हेंस लिपरर्शी के नाम है। इटली के वैज्ञानिक गैलीलियो ने भी उच्च गुणवत्ता वाला दूरबीन बनाया था।

एक बार गैलीलियो वीनस गया। उसे वहाँ पता लगा कि बेल्जियम के किसी व्यक्ति ने एक ऐसा यन्त्र बनाया है जिससे दूर की वस्तुएं बड़ी दिखाई देती हैं, पर त्रुटि यह थी कि उसमें हर वस्तु उल्टी नज़र आती थी। गैलीलियो ने यह सुनकर दूरबीन बनाने की तैयारियां करने लगा। उसने महीनों की कड़ी मेहनत के बाद दूरबीन के दो शीशे तैयार कर लिये और उसे ताँबे की बनी हुई एक नलकी के सिरों में फिट कर दिया। यह थी संसार की पहली सफल दूरबीन। इसमें कई-कई मील दूर की वस्तुएं बड़ी दिखाई देती थीं तथा साफ और सीधी नजर आती थी। इसके बाद इसे और उत्तम बनाने का प्रयत्न करता रहा। अपने इन प्रयत्नों में वह बहुत सफल रहा और आखिर उसने ऐसी दूरबीन बनाई जो दूर की चीजों को बत्तीस गुणा बड़ा करके दिखाती थी।

गैलीलियो ने अपनी दूरबीन की सहायता से देखा और सिद्ध किया कि कई सितारे सूरज से भी कई गुना बड़े हैं और धरती से बहुत दूर होने के कारण चमकदार अणुओं के समान दिखाई देते हैं।

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

**Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)**
**Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006**

Registered with the : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
Registrar of Newspaper : License No. U (DN) -23/2021-2023
For India Under RNI No. 25672/1973 : Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

# पत्र-पत्रिकाएं

**सन्त निरंकारी**

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

**एक नज़र**

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

**हँसती दुनिया**

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

**उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -**

**Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)**
**Email : patrika@nirankari.org**

## पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

**पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।**